सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 22 फरवरी, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 172, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

ऊर्जा

फोटो- बंसीलाल परमार

हमारा ट्रेड आंकड़ा नहीं है, यह भरोसे की झलक है

● पीएम मोदी बोले-लैटिन अमेरिका में ब्राजील भारत का सबसे बड़ा पार्टनर ● लूला बोले-हम दोनों डिजिटल सुपरपावर ,रणनीतिक साझेदारी को देंगे नई ऊर्जा

नई दिल्ली (एजेंसी)। ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा और पीएम मोदी ने शनिवार को हैदराबाद हाउस में द्विपक्षीय बैठक की। इस बैठक में दोनों दोनों के प्रतिनिधियों के बीच कई अहम मुद्दों पर बातचीत हुई। राष्ट्रपति लूला के साथ करीब 14 मंत्री और ब्राजील की कंपनियों के टॉप सीईओ का एक बड़ा डेलीगेशन भी बैठक में मौजूद रहा। भारत की ओर से पीएम मोदी के साथ विदेश मंत्री एस जयशंकर, वाणिज्य एवं व्यापार मंत्री पीयूष गोयल, एनएसए अजीत डोभाल समेत कई अधिकारियों ने इस द्विपक्षीय बैठक में भाग लिया। बैठक के बाद राष्ट्रपति लूला के साथ संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए पीएम मोदी ने कहा, राष्ट्रपति लूला और उनके डेलीगेशन का भारत में स्वागत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह ट्रेड सिर्फ एक आंकड़ा नहीं बल्कि भरोसे की झलक है। पीएम बोले आपने पिछले वर्ष मेरा ब्राजील में जिस तरह स्वागत किया था, मैं उसी तरह आप सभी का अभिनंदन करता हूं।

छठी बार भारत आना मेरे लिए खुशी की बात है

ब्राजील के प्रेसीडेंट लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा ने कहा, मेरे प्यारे दोस्त प्रधानमंत्री मोदी, छठी बार इस देश में वापस आना मेरे लिए खुशी की बात है। भारत और ब्राजील के बीच मीटिंग बहुत बढ़िया मीटिंग है। हम सिर्फ ग्लोबल साउथ की दो सबसे बड़ी डेमोक्रेसी नहीं हैं। यह एक डिजिटल सुपरपावर और एक रिन्यूएबल एनर्जी सुपरपावर की मीटिंग है। हम दोनों ही बहुत अलग-अलग तरह के देश हैं और कल्चरल इंडस्ट्री के हब हैं और हम दोनों ही मल्टीलेटरलिज़्म और शांति की रक्षा करते हैं। ब्राजील के राष्ट्रपति लूला का ये दौरा 18 से लेकर 22 फरवरी तक का है। अपने राजकीय दौरे पर राष्ट्रपति लूला इंडिया-एआई इम्पैक्ट समिट

2026 में भी शामिल हुए। द्विपक्षीय बैठक के अलावा द्रौपदी मुर्मु ब्राजील के प्रेसीडेंट के सम्मान में एक डिनर होस्ट करेंगी। इससे पहले लूला ने भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर से मुलाकात की। मुलाकात को लेकर ईएएम ने एक्स पर लिखा, भारत के राजकीय दौरे पर आए ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा से मिलकर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। हमारी रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए उनकी गर्मजोशी भरी भावनाओं और गाइडेंस की बहुत तारीफ करता हूं।

- **कई फील्डों में सहयोग बढ़ाने पर बनी सहमति**- पीएम मोदी ने आगे कहा, मुझे खुशी है कि हम ब्राजील में डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए सेंटर ऑफ एक्सीलेंस बनाने पर काम कर रहे हैं। हम आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, सुपरकंप्यूटर, सेमीकंडक्टर और ब्लॉकचेन जैसे एरिया में भी अपने सहयोग को प्रायोरिटी दे रहे हैं। दोनों देशों का मानना है कि टेक्नोलॉजी सबको साथ लेकर चलने वाली होनी चाहिए और शेयर्ड प्रोग्रेस के लिए एक ब्रिज बननी चाहिए।
- **रिन्यूएबल एनर्जी, इथेनॉल पर बढ़ेगी भागीदारी**- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, एनर्जी कोऑपरेशन हमारे रिश्ते का एक मजबूत स्तंभ रहा है। हाइड्रोकार्बन के साथ हम रिन्यूएबल एनर्जी, इथेनॉल ब्लेंडिंग और सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल जैसे कई एरिया में भी कोऑपरेशन बढ़ा रहे हैं। ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस में ब्राजील का ऐक्टिव पार्टिसिपेशन ग्रीन फ्यूचर के लिए हमारे शेयर्ड कमिटमेंट को दिखाता है। ब्राजील ने डिजास्टर रेजिलिएंट इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए कोएलिशन की को-चेयर करने का भी प्रपोजल दिया है। मैं इस इनिशिएटिव के लिए प्रेसिडेंट लूला को बधाई देता हूं। इस एरिया में ब्राजील का बड़ा एक्सपीरियंस समझौते को और मजबूत करने में मदद करेगा।

सुप्रभात

तुम उसे तस्वीर से हटा दोगे?
रंगों से भरी उसकी हंसी को पोंछ दोगे
किसी कवि की कल्पनाओं के
बगीचे जैसे
खिले-खिले उसके चेहरे पर
पोत दोगे अपनी कुत्सित
कामनाओं की कालिख?

लेकिन कैसे गायब करोगे
उसकी मौजूदगी को
जो बिखरी हुई है आसपास
दीवार पर एक साये की तरह
हवा में खुशबू की तरह
पेड़ों के पत्तों की सरसराहट की तरह

तुम उसकी आवाज को दबा दोगे
बंद कर दोगे उसकी जुबान
लेकिन कैसे रोकोगे उस गीत को
जिसे वह गाती तो अपने मन में है
लेकिन जिसकी गूंज
चौरतफा सुनाई पड़ती है
जो हर चुप्पी में बोलती है

तुम कागज से मिटा दोगे उसका नाम
फेर दोगे उस पर स्याही
उसकी पहचान को गायब
कर देना चाहोगे
लेकिन कैसे मिटा सकोगे
उसकी यादों को
जो दर्ज हैं स्मृतियों के दस्तावेजों में
बैठी हुई हैं लोगों के दिलों में
घर किए हुए हैं उनकी धड़कनों में

तुम उसे तस्वीर से हटा सकते हो
उसकी आवाज को दबा सकते हो
तुम कुचल सकते हो सभी फूलों को
लेकिन बसंत को आने
से नहीं रोक सकते।

- पूजा सिंह

देशभर में प्रदर्शन

कांग्रेस के खिलाफ सड़क पर बीजेपी

● राहुल को काले झंडे दिखाए, यूथ कांग्रेस के खिलाफ निकाली भड़ास

पुलिस बोली-समिट में हंगामा करने वाले 5 दिन की पुलिस रिमांड पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के एआई समिट में हंगामा करने के विरोध में भाजपा शनिवार को दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार, तेलंगाना और जम्मू-कश्मीर में प्रदर्शन किया। दिल्ली में कांग्रेस कार्यालय के बाहर भाजपा युवा मोर्चा के कार्यकर्ता 'कांग्रेस+राहुल गांधी=गद्दार', 'देशद्रोही राहुल गांधी माफी मांगे' के पोस्ट लेकर विरोध किया। मुंबई के मुलुंड में भाजपा कार्यकर्ताओं ने राहुल गांधी के काफिले को काले झंडे दिखाए। गुजरात के सूरत में भाजपा कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस का पुतला जलाया। जम्मू-कश्मीर में भी भाजपा कार्यकर्ताओं ने विरोध जताया। बिहार के पटना में कांग्रेस का पुतला जलाया गया। इधर दिल्ली के पटियाला कोर्ट में एआई इम्पेक्ट समिट में हंगाम करने वाले 4 आरोपियों को पेश किया गया। पुलिस ने कहा ये सभी नेपाल के जेन जेड आंदोलन से प्रेरित थे। प्रदर्शन एक बड़ी साजिश का हिस्सा था। हंगामे के दौरान कई ग्लोबल लीडर्स और टेक इंडस्ट्री के एक्सपर्ट वहां मौजूद थे। पुलिस ने कहा कि हमें जांच करने है कि आरोपियों ने पीएम मोदी के चेहरे वाली टी-शर्ट पहनी थी, उसे किसने प्रिंट कराया। इन सभी के मोबाइल रिकवर करने की भी जरूरत है। इसके बाद ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट रवि ने सभी चार आरोपियों 5 दिन की पुलिस रिमांड में भेज दिया।

भारत मंडपम में यूथ कांग्रेस ने हंगामा किया 20 फरवरी को दिल्ली स्थित भारत मंडपम में इंडियन यूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने शुक्रवार को एआई समिट 2026 में भारत-अमेरिका ट्रेड डील के खिलाफ प्रदर्शन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सेवढ़ा में दी दतिया जिलेवासियों को 529 करोड़ रूपए से अधिक के 71 विकास कार्यों की सौगात

विकास, नवाचार और किसान समृद्धि का रोल मॉडल बन रहा दतिया : मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि दतिया वीरता और भक्ति का अद्भुत संगम है। यहां आस्था और प्रगति का उत्कृष्ट संगम है। हमारी सरकार दतिया के पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सभी आवश्यक कदम उठा रही है। विगत वर्ष बुंदेला काल के दतिया महल और गुज्जरा लघु शिलालेख को यूनेस्को की टेंटेटिव सूची में स्थान मिल गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दतिया जिले की विकास यात्रा अब रूकने वाली नहीं है। आज दतिया विकास, नवाचार, महिला सशक्तिकरण और किसान समृद्धि का एक रोल मॉडल बन गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दतिया में एयरपोर्ट के शुभारंभ के साथ दतिया से भोपाल फ्लाइट भी शुरू हो गई है। खजुराहो से नई दिल्ली तक वंदे भारत ट्रेन के जरिए दिल्ली अब दतिया से चंद घंटों की दूरी पर आ गया है। उन्होंने कहा कि दतिया में मां पीताम्बरा लोक का निर्माण तेजी से प्रगति पर है। इससे जिले के पर्यटन को नए पंख लगेंगे और दतिया को एक नई धार्मिक एवं आध्यात्मिक पहचान भी मिलेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को दतिया जिले के सेवढ़ा तहसील मुख्यालय में 529 करोड़ लागत के 71 विभिन्न विकास कार्यों के लोकार्पण एवं भूमि-पूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने घोषणा करते हुए कहा कि करीब सवा 2 हजार करोड़ रूपए की लागत वाली रतनगढ़ सिंचाई परियोजना से इस क्षेत्र के 40 हजार से अधिक किसानों को सिंचाई सुविधा का लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दतिया जिले के नशामुक्ति कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस पुनीत कार्य के लिए जिलेवासियों को बधाई दी।

केन-बेतवा राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना का दतिया के किसानों को मिलेगा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कभी पेयजल संकट से जूझने वाला दतिया में आज हर घर में नल से जल पहुंच रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन-बेतवा राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना पर काम चल रहा है। इसका भरपूर लाभ दतिया जिले के किसानों को भी मिलेगा। अब किसानों को सिंचाई के लिए पानी की चिंता करने की जरूरत नहीं है। दतिया जिले में 1.48 लाख हैक्टेयर से अधिक भू-रकबे में सिंचाई सुविधा का विस्तार होने से यहां कृषि उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई है। विगत दो सालों में यहां 7 लघु सिंचाई परियोजनाओं का निर्माण हुआ है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि का लाभ जिले के 1.37 लाख से अधिक किसानों को मिल रहा है। फसल बीमा योजना यहां के 1.26 लाख से अधिक किसानों का सुरक्षा कवच बनी है।

सुबह सवेरे
भोपाल ■ रविवार, 22 फरवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

भारंगम्

शकील अख्तर

जलम् अमृतम् : जल को लेकर गंभीर सांस्कृतिक चेतावनी

कबीर ने ठीक ही कहा है जीवन, धर्म और संसार सब पानी के बिना शून्य हैं - लेकिन आज नदियां सूख रही हैं, जो बची हैं वो गंदगी और ज़हरीले रसायनों से दम तोड़ रही हैं। गंध हीन, रंग हीन, पवित्र, दिव्य जल आज एक सपना है। आज तो प्रदूषण का सांसों पर पहरा है और जल संकट से इंसानी ज़िंदगी ही ख़तरे में है। देश के कई शहर निर्जल-बंजर 'केप टाउन' बनने की कगार पर है। क्या ऐसे हालात में उम्मीद की कोई किरण बाकी है?

कला-संस्कृति और विज्ञान का मेल:

25 वें भारत रंग महोत्सव में यह था नाटक 'जलम् अमृतम्'। कला-संस्कृति और विज्ञान का सुंदर मेल। यह नाटक एक सांस्कृतिक चेतावनी बनकर उभरता है। जैसा इसका प्रवाही संगीत था वैसा ही था इसका संदेश। हो सकता है 'पानी' जैसा विषय किसी को थियेटर के काबिल न लगे। लेकिन ऐसे ज़रूरी मुद्दों और सवालों पर बात करना 'कला धर्म' नहीं तो क्या! बशीर बद्र ने कहा भी है।

गर फ़ुर्सत मिले 'पानी' की तहरीरों को पढ़ लेना,
हर इक दरिया हज़ारों साल का अफ़साना लिखता है

दिव्य, पवित्र, देव स्वरूप जल की कहानी:

इस शोध पूर्ण नाटक का लेखन मधु पंत ने किया है। उनके लेखन में जल की पहली बूंद से लेकर आज के 'बोतल वाले पानी' तक का पूरा वृतांत है। जल की वह यात्रा है जो मानव अस्तित्व और जीवन के लिये बेहद ज़रूरी है। यह जीवन, प्रकृति और ब्रह्मांड का आधार है। पंच तत्वों - वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी और आकाश - में शामिल है। कहां तो हम रंगहीन, गंध हीन जल को दिव्य, पवित्र, देव स्वरूप मानते थे और कहां आज हम प्रदूषित जल और सूखती-गायब होती नदियों के संकट से जूझ रहे हैं।

इस नाटक का जितना अच्छा लेखन है, निशा त्रिवेदी ने उतना ही सुलझा निर्देशन किया है। नाटक जानकारियों से भरपूर है। अगर इसे गीत-संगीत, नृत्य और कथन का सम्मिश्रित आधार न दिया जाता तो यह नाटक एक डॉक्यूमेंट्री या सरकारी प्रचार का ड्रामा बनकर रह जाता। बेशक इसकी परिकल्पना में अनुभवी लेखक और वरिष्ठ निर्देशक लोकेंद्र त्रिवेदी का योगदान है। नाटक के 'नीले-आसमानी' दृश्य-बिम्बों की कल्पना और उसके संगीत में उन्होंने अपने अनुभव को शामिल किया है।

'जलम् अमृतम्' का संगीत- नाटक की जान:

नाटक का संगीत इसकी आत्मा है। इसमें लोक धुनों के साथ ही सुगम और शास्त्रीय संगीत का उपयोग हुआ है। संगीत ईशा सिंह और मिलिंद त्रिवेदी ने तैयार किया है। मुख्य गायन स्वर राहुल का है, लेकिन सभी सहयोगी बधाई के पात्र हैं। नाटक में नृत्य की भी महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसका श्रेय भूमिकेश्वर सिंह की कोरियोग्राफ़ी को जाता है।

जहां था पानी, वहां खिली थी ज़िंदगी:

नाटक याद दिलाता है कि तमाम सभ्यताएं और संस्कृतियां नदियों की देन हैं। जहां भी प्रचुर पानी था - नदियां, झीलें और तालाब थे - वहां मानव सभ्यता ने विकास किया। मगर लालच भरे विकास का चक्र, उद्योगों और कल-कारखानों के साथ ही नदियों के लिये ख़तरा बनता गया। आने वाले वक्त में जीवन की इन्हीं अनमोल बूंदों को लेकर युद्ध का ख़तरा है।

क्या हमारे शहर भी 'केप टाउन' बन जायेंगे:

पानी के हालात हमारे वजूद के लिये ख़तरे की घंटी हैं। जल्द ही दक्षिण अफ्रीका के केप टाउन जैसी नौबत आ सकती है। केप टाउन पर छ्ड्ड4 'द्रह्श (जल-विहीन शहर) की घोषणा जनवरी 2018 में की गई थी। आगे राशन से पानी मिलने के हालात पैदा हो सकते हैं। क्या हम ह्ह ड्ड्ड्य्ह्ह्ह का मतलब भी समझ रहे हैं!!

उम्मीद की किरण जगाता है नाटक:

नाटक अपनी कहानी में जल संकट के ख़तरों के बारे में ही नहीं बताता, यह उम्मीद की किरण जगाने वाले 'जल पुरूष' (Water man of India) राजेंद्र सिंह के साथ ही अनिल अग्रवाल, संजय सिंह, सुधीरेंद्र शर्मा, राजीव पाहवा जैसी अभियान कर्ताओं की तरफ़ इशारा करता है। बताता है कि राजस्थान में तरुण भारत संघ के माध्यम से राजेंद्र सिंह ने हज़ारों तालाब और जोहड़ पानी से लबरेज़ करने का सफल अभियान चलाया। बंजर हालात को फिर से हरा-भरा बनाया। ऐसे अभियान-कर्ताओं की आज समाज में क़दम-क़दम पर ज़रूरत है।

आँखें खोलकर देखने की ज़रूरत:

'भारंगम' में इस तरह के अर्थ पूर्ण नाटक का होना एक अच्छी बात है। नारेबाज़ी और कब्र से उठाकर लाई गई कहानियों से ना तो देश का भला होगा ना समाज का। हमें वर्तमान और भविष्य को हमारी समझ भरी संस्कृति और विज्ञान के आईने में देखने की ज़रूरत है। 'जलम् अमृतम' की आगे की प्रस्तुतियों में भी कोशिश होना चाहिये कि जो संदेश दिया जा रहा है, वह सिर्फ एक आख्यान और दिव्य वाणी बनकर ना रह जाये।

मंच पर जलम् के जगमगाते सितारे:

नाटक में सूत्रधार, जल, ग्रामीण आदि की भूमिकाओं में शिखा आर्या, आदित्य बिष्ट, सुफियान, सपना, अहसान, हर्ष, दिनेश, राहुल (मुख्य गायक), पंकज, करिश्मा, गीता जी, मेघा, शिवांगी, अंशु, अंजलि ने बढ़िया अभिनय किया है। संगीत मंडली के कलाकारों में रुपिंदर सिंह, तन्मय झा, ज़रीन, दामिनी और गगन सिंह शामिल रहे। संदीप कुमार, बुशरा खातून, प्रीति खरवार, दिव्यांग श्रीवास्तव ने तकनीकी पक्ष संभाला और व्यवस्था मिताली और ऋषि राय की रही।

दिल्ली में धार्मिक-ऐतिहासिक जगह लश्कर के निशाने पर

- खुफिया एजेंसियों का अलर्ट, लाल किला-चांदनी चौक क्षेत्र में सुरक्षा बढ़ाई गई

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा भारत की कुछ प्रमुख धार्मिक जगहों पर हमला कर सकता है। खुफिया जानकारी मिलने के बाद शनिवार को दिल्ली के प्रमुख धार्मिक और ऐतिहासिक स्थलों पर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। अधिकारियों के अनुसार सूचना मिली है कि आतंकी संगठन लश्कर (इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस) के जरिए लाल किला और चांदनी चौक के आसपास के इलाके में हमला करा सकता है। खास तौर पर चांदनी चौक इलाके के एक मंदिर पर खतरे की आशंका है। हालांकि इन सूचनाओं की अभी जांच की जा रही है, लेकिन एहतियात बरती जा रही है। केंद्रीय एजेंसियां और दिल्ली पुलिस साथ काम कर रहीं।

जंग के मैदान में तब्दील हुई छत्तीसगढ़ की पहाड़ियां

- दो हजार जवानों ने घेरा माओवादियों का सुरक्षित ठिकाना
- तेलंगाना और छत्तीसगढ़ सीमा पर चल रहा निर्णायक अभियान

जगदलपुर (एजेंसी)। माओवादी हिंसा के समूल खात्मे की 31 मार्च 2026 की समय-सीमा से पहले सुरक्षाबल ने छत्तीसगढ़-तेलंगाना सीमा पर स्थित कर्रेगुट्टा पहाड़ी में निर्णायक अभियान शुरू किया है। छत्तीसगढ़ के सुकमा, दंतेवाड़ा व बीजापुर जिलों से आए करीब दो हजार जवानों ने पहाड़ी को पूरी तरह से घेर लिया है। सुरक्षा एजेंसियों का लक्ष्य माओवादियों के शेष नेटवर्क व उनके अंतिम सुरक्षित ठिकानों को पूरी तरह ध्वस्त करना है। खुफिया एजेंसियों के इनपुट के आधार पर कर्रेगुट्टा क्षेत्र में केशा, पापाराव जैसे 100 से अधिक माओवादी हिंसकों की मौजूदगी की बात सामने आई है। इसी आधार पर पहाड़ी की रणनीतिक घेराबंदी कर सर्च और कांबिंग ऑपरेशन चलाया जा रहा है। ड्रोन सर्विलांस, आधुनिक संचार उपकरण व रियल-टाइम मॉनिटरिंग के जरिये हर गतिविधि पर नजर रखी जा रही है। कर्रेगुट्टा पहाड़ी के नीचे पहले से स्थापित स्थायी सुरक्षा कैंप के चलते रसद, चिकित्सा और त्वरित सहायता व्यवस्था इस बार अधिक मजबूत बताई जा रही है। गौरतलब है कि वर्ष 2025 में इसी क्षेत्र में सुरक्षाबल की बड़ी कार्रवाई में 31 माओवादी मारे गए थे व भारी मात्रा में हथियार व विस्फोटक बरामद किए गए।

- अमेरिकी टैरिफ डील

राहुल का आरोप, मोदी ने विश्वासघात किया

- मल्लिकार्जुन खड़गे बोले-सरकार ट्रम्प की ट्रैप डील में फंसी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिकी टैरिफ डील पर विपक्ष फिर मोदी सरकार पर हमलावर है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शनिवार को पीएम मोदी पर समझौता करने का आरोप लगाया। कहा कि उनका विश्वासघात अब उजागर हो चुका है। उन्होंने दावा किया कि पीएम इस व्यापार समझौते में फिर से आत्मसमर्पण कर देंगे। उधर कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने कहा कि टैरिफ पर अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट के फैसले का इंतजार किए बिना मोदी सरकार ने इतनी जल्दबाजी में एक ट्रैप डील में शामिल क्यों हुए, जिसने भारत से भारी रियायतें छीन लीं।

- देशवासियों के सामने खड़े होकर सच्चाई बतानी चाहिए- खड़गे ने कहा मोदी जी को देशवासियों के सामने खड़े होकर सच्चाई बतानी चाहिए। किसने या किन कारणों ने आपको भारत के राष्ट्रीय हित और रणनीतिक स्वायत्तता से समझौता करने के लिए दबाव डाला क्या यह एप्सटीन फाइल्स थीं। क्या भारत सरकार अपनी गहरी निष्क्रियता से जागेगी। क्या 140 करोड़ भारतीयों के आत्मसम्मान, साथ ही किसानों, मजदूरों, छोटे व्यवसायों और व्यापारियों के हितों की रक्षा करने वाला एक निष्पक्ष व्यापार समझौता पेश करेगी।

12 की एज में गए लंदन, 20 साल बाद मंत्री बनकर लौटे

- इंग्लैंड के एआई मिनिस्टर 'बिहारी बाबू' कनिष्क यादों में डूबे

पटना/मुजफ्फरपुर (एजेंसी)। कनिष्क नारायण जब 12 साल के थे तो उनके माता-पिता बेहतर फ्यूचर की तलाश में इंग्लैंड चले गए। फिर वेल्स शहर में स्थाई तौर पर बस गए। 20 साल बाद इंग्लैंड के एआई मिनस्टर बनकर कनिष्क भारत लौटे। दिल्ली एयरपोर्ट पर लैंड करते ही उनको मुजफ्फरपुर (बिहार) की याद सताने लगी। आखिरकार, अपने बिजी शेड्यूल से वक्त निकालकर मुजफ्फरपुर चाचा-चाची और भतीजे-भतीजियों से मिलने पहुंच ही गए। भारत पर लगभग दो सदी तक राज करने वाले इंग्लैंड में आर्टिफिसियल इंटेलीजेंस विभाग (एआई मिनिस्टर) अब 'बिहारी बाबू' के हाथों में है। यूनाइटेड किंगडम के एआई मंत्री कनिष्क नारायण ने अपने पुश्तैनी घर बिहार के मुजफ्फरपुर पहुंचे। फिर शनिवार सुबह पटना पहुंचने पर उन्होंने जनता दल (यूनाइटेड) के कार्यकारी अध्यक्ष और सांसद संजय झा से मुलाकात की।

बंगाल में एसआईआर, हर सीट पर औसतन 19000 नाम हटे

- टीएमसी बोली-सवा करोड़ बंगाली लाइन में लगे, ईसी बना वजह
- भाजपा का भी बड़ा आरोप- ममता को घोस्ट वोटर्स हटने का डर

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में दो-तीन माह ही बचे हैं। यहां अभी भाषण और रैलियों का शोर नहीं है। लेकिन, सियासत भरपूर गर्म है। कोलकाता के न्यू मार्केट से चांदनी चौक, न्यू टाउन से जेसप बिल्डिंग और मुर्शिदाबाद के बेलडांगा से बर्धमान तक करीब 600 किमी के सफर में साफ हो गया कि अभी वोटर लिस्ट ही चुनावी रणभूमि बनी हुई है। कोलकाता के एक वरिष्ठ पत्रकार कहते हैं कि ममता बनर्जी ने एसआईआर की लड़ाई सुप्रीम कोर्ट ले जाकर अपनी जुझारू छवि फिर हाईलाइट की है। टीएमसी उनके सुप्रीम कोर्ट के वीडियो वायरल कर रही है। जगह-जगह ममता की काले कोट में होर्डिंग लगे हैं। भाजपा एसआईआर को घुसपैठियों के खिलाफ लड़ाई बता रही थी। पर, 'लॉजिकल डिस्क्रिपेंसी' यानी विसंगति के आधार पर जारी सवा करोड़ बंगाली लाइन में लग गए हैं। हर सीट पर औसतन 19 हजार से ज्यादा नाम हटे हैं। टीएमसी प्रवक्ता कुणाल घोष कहते हैं, भाजपा ने एसआईआर से हमारी लड़ाई आसान कर दी। 15 साल की सत्ता की कुछ एंटी-इंकंबेंसी होगी, तो खत्म हो गई। एसआईआर भाजपा के लिए उल्टा तीर हो गया। वे फील्ड में नहीं जा पा रहे। 'भाजपा आयोग' ने सवा करोड़ बंगालियों को लाइनों में लगवा दिया।

ममता के विसर्जन का रास्ता बन रहा है एसआईआर- भाजपा प्रदेशाध्यक्ष समिक भट्टाचार्य कहते हैं कि ममता 'घोस्ट' वोटर्स और घुसपैठियों के नाम कटने से डरी हैं। वह इनकी बदौलत जीतती थीं। मैं ऐसे लोगों को जानता हूं, जो कई साल पहले गुजर चुके, लेकिन उनके वोट पड़ते थे। सिर्फ वोटर लिस्ट की सफाई नहीं हो रही, यह ममता के विसर्जन का रास्ता बन रहा है।

- **'लॉजिकल डिस्क्रिपेंसी के तहत ज्यादातर नोटिस-** एसईआर के तहत ड्राफ्ट वोटर लिस्ट से 58 लाख 20 हजार 898 नाम हटे हैं। 'लॉजिकल डिस्क्रिपेंसी' तथा 'अनमैप्ड' श्रेणियों को मिलाकर करीब 1.26 करोड़ नोटिस जारी हुए हैं। निर्वाचन आयोग के दफ्तरों में दस्तावेज अपलोड करने और जांच की आपाधापी है। कोलकाता नॉर्थ के जिला निर्वाचन ऑफिस जेसप बिल्डिंग में 14 फरवरी को 'लॉजिकल डिस्क्रिपेंसी' की सुनवाई में मूल रूप से बिहार के रहने वाले एक बुजुर्ग पत्नी और बेटे के साथ आए। वे लंबे समय से कोलकाता में हैं, पहले वोट दे चुके हैं, लेकिन इस बार नोटिस मिला। कोलकाता की बबीता ने बताया कि वोटर लिस्ट में उनके पिता के नाम में 'कुमार' है, लेकिन 2002 की लिस्ट में 'केआर ' है।

विक्रमोत्सव 2026: अभिज्ञानशाकुन्तलम्- अंगूठी देख लौटी स्मृति

उज्जैन डॉ. जफर महमूद

उज्जैन में आयोजित विक्रमोत्सव के विक्रम नाट्य समारोह की पंचम संध्या महाकवि कालिदास के प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का हिंदी में मंचन हुआ। नाट्य निर्देशक अर्पिता धागत के निर्देशन में प्रस्तुत अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास का विश्वविख्यात नाटक है। नाटक राजा दुष्यन्त तथा शकुन्तला के प्रणय, विवाह,विरह, तथा पुनर्मिलन की एक सुन्दर कहानी है।नाटक में दर्शाया गया कि राजा दुष्यंत वन में ऋषि कण्व के आश्रम पहुँचते हैं, जहाँ उनकी भेंट शकुंतला से होती है और दोनों गंधर्व विवाह करते हैं। दुष्यंत द्वारा दी गई अंगूठी पहचान-चिह्न बनती है, लेकिन ऋषि दुर्वासा के शाप के कारण दुष्यंत शकुंतला को भूल जाते हैं। अंगूठी नदी में गिर जाने से स्थिति और जटिल हो जाती है। अंततः अंगूठी मिलने पर दुष्यंत की स्मृति लौटती है और दोनों का पुनर्मिलन होता है। अभिज्ञानशकुंतलम् नाटक में नाटकीयता, इसके सुन्दर कथोपकथन, इसकी काव्य-सौन्दर्य से भरी उपमाएं और स्थान-स्थान पर प्रयुक्त हुई समयोचित सूक्तियाँ ; और इन सबसे बढ़कर विविध प्रसंगों की ध्वन्यात्मकता इतनी अद्भुत है कि इन दृष्टियों से देखने पर संस्कृत के भी अन्य नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् से टक्कर नहीं ले सकते; फिर अन्य भाषाओं का तो कहना ही क्या। प्रस्तुत नाटक का हिंदी अनुवाद प्रसिद्ध कथाकार मोहन राकेश द्वारा किया गया था।

मंच पर दुष्यंत के रूप में विश्मय कुमार, विकास रावत और पुष्पराज सिंह बघेल ने प्रभावी अभिनय किया। शकुंतला के पात्र को नूपुर पांडे, शुभांशी शर्मा, रवीना मिंज, यशवानी गौंड और प्रिया गोस्वामी ने जीवंत किया। विदूषक की भूमिका में गुरिंदर कुमार ने नाटक में कसावट भरी। अनुसूया (महिमा) अग्रवाल एवं प्रियंवदा (शुभांशी शर्मा)ने शकुंतला की सखियां बन कहानी को रोचक बनाया।गौतमी (शुभांगी ओखड़े) नट(देववर्ष अहिरवार) ऋषि दुर्वासा (दीपेंद्र सिंह लोधी)नटी (रवीना मिंज और प्रिया गोस्वामी) शारंगरव (पुष्पराज सिंह बघेल) शारद्वत (दीपेंद्र सिंह लोधी) ने अपने पात्रों को कर दिखाया।

एआईएसएफ के सम्मेलन में तोड़फोड़ निंदनीय: भाकपा

भोपाल। विगत 20 फरवरी को सागर में हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के परिसर में आयोजित ऑल इंडिया स्टूडेंट फेडरेशन के सम्मेलन में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े लोगों द्वारा तोड़फोड़ और मारपीट की वारदात की भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने कड़ी भर्त्सना करते हुए मध्य प्रदेश के पुलिस महानिदेशक और सागर विश्वविद्यालय के कुलगुरु से दोषी लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी मध्य प्रदेश के राज्य सचिव कॉमरेड शैलेन्द्र शैली ने बताया कि ' सागर विश्वविद्यालय के परिसर में ऑल इंडिया स्टूडेंट फेडरेशन के सम्मेलन में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े लगभग 50 - 60 लोगों ने हमला कर तोड़फोड़ की ,आयोजक छात्रों को पीटा गया और झण्डे,बैनर फाड़ दिये गए। हमले के दौरान विश्वविद्यालय के स्टाफ और पुलिस कर्मियों ने आयोजक छात्रों की सुरक्षा की कोई कार्रवाई नहीं की । छात्रों के सम्मेलन को इस तरह बाधित करना छात्रों के लोकतांत्रिक अधिकारों और अभिव्यक्ति की आज़ादी पर हमला है।

सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में मरीजों को उपलब्ध हों तृतीयक स्तर की स्वास्थ्य सेवाएं, अन्यत्र रेफर करने की आवश्यकता न पड़े ऐसे प्रयास हों: उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि सुपर स्पेशलिटी अस्पताल रीवा से मरीजों को अन्यत्र रेफर न किए जाने के प्रयास हों, तृतीयक स्तर की उन्नत चिकित्सा सेवाएं यही उपलब्ध हों। यह प्रयास हो कि बाहर के मरीज भी यहाँ इलाज के लिए आएं। रीवा सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में डीएम कॉर्डियोलॉजी के लिए चार सीटों की स्वीकृति हो गई है। अब यहाँ डीएम की पढ़ाई होगी। सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में आयोजित बैठक में उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने चिकित्सा सेवाओं एवं व्यवस्थाओं की वृहद समीक्षा की।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि यह अस्पताल विन्ध्य क्षेत्र के लिए वरदान साबित हुआ है। यहाँ के चिकित्सकों व चिकित्सकीय स्टाफ द्वारा पूरी लगन व मेहनत से मरीजों का इलाज किया जा रहा है। प्रदेश भर में इस अस्पताल द्वारा किए गए चिकित्सा इलाज की चर्चा है। यह अस्पताल प्रदेश के अन्य सुपर स्पेशलिटी अस्पतालों की तुलना में सबसे ज्यादा मरीजों को इलाज की सुविधा देने वाला अस्पताल बना है। अब इस अस्पताल में डीएम कॉर्डियोलॉजी के पद स्वीकृत हुए हैं। शीघ्र ही यहाँ अन्य विभागों में एमसीएच की सीटें भी स्वीकृत होंगी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने अस्पताल की व्यवस्थाओं तथा कार्यरत चिकित्सकों की पदोन्नति व उनको मिलने वाले इंसेन्टिव के विषय में भी जानकारी ली। उन्होंने निर्देश दिए कि नियत समयावधि पूर्ण करने पर चिकित्सकों को अगले पद पर तत्काल पदोन्नति दें। उन्होंने चिकित्सकों व स्टाफ से अपेक्षा की कि इसी तरह मनोयोग से मरीजों का इलाज करते रहें। बताया गया कि सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में वर्ष 2020 में 155, वर्ष 2021 में 1749, वर्ष 2022 में 2501, वर्ष 2023 में 2846, वर्ष 2024 में 2254 एवं वर्ष 2025 में 2327 एंजियोग्राफी की गईं। जबकि वर्ष 2020 में 80, वर्ष 2021 में 832, वर्ष 2022 में 1595, वर्ष 2023 में 1685, वर्ष 2024 में 1500 व 2025 में 1371 मरीजों की एंजियोप्लास्टी की गई।

दिल्ली में कांग्रेसियों के कृत्य का एमपी में विरोध

● इंदौर में भारी उपद्रव, एआई समिट के विरोध में भिड़े भाजयुमो-कांग्रेस कार्यकर्ता ● पत्थरबाजी में पुलिस-पत्रकार लहूलुहान

भोपाल/इंदौर (नप्र)। शनिवार को गांधी भवन स्थित कांग्रेस कार्यालय के बाहर उस समय माहौल बिगड़ गया, जब भारतीय जनता युवा मोर्चा के कार्यकर्ता प्रदर्शन करते हुए वहां पहुंचे। कुछ ही देर में दोनों पक्ष आमने-सामने हो गए। देखते ही देखते नारेबाजी के बीच धक्का-मुक्की शुरू हुई और फिर पथराव होने लगा। हालात बेकाबू होते देख पुलिस को पानी की बौछार करनी पड़ी।

पत्थरों के साथ फेंकी गईं पानी की बोतलें- कुछ ही देर में स्थिति बिगड़ गई और दोनों तरफ से पत्थर फेंके जाने लगे। मौके पर मौजूद लोगों ने बताया कि पत्थरों के साथ पानी की बोतलें, संतरे और टमाटर भी एक-दूसरे पर फेंके गए। अचानक हुए पथराव से वहां अफरा-तफरी मच गई। पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए वाटर कैनन का इस्तेमाल किया।

एसआई के सीने में लगा पत्थर

इस झड़प में कई लोग घायल हुए हैं। पथराव के दौरान सब इंस्पेक्टर आर.एस. बघेल के सीने के पास पत्थर लगने पर उन्हें तुरंत अस्पताल भेजा गया। भाजपा की महिला कार्यकर्ता बिंदु चौहान भी घायल हुई हैं। इसके अलावा कवरेज कर रहे

पत्रकारों को भी चोटें आईं। दोनों को साथियों की मदद से अस्पताल पहुंचाया गया।

घटना के बाद क्षेत्र में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और पूरे घटनाक्रम के वीडियो फुटेज खंगाले जा रहे हैं। फिलहाल इलाके में स्थिति नियंत्रण में बताई जा रही है, लेकिन तनाव बना हुआ है।

एआई इम्पैक्ट समिट के विरोध के बाद घेराव की कोशिश

जानकारी के मुताबिक दिल्ली में हुए एआई इम्पैक्ट समिट के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं के अर्धनग्न प्रदर्शन के विरोध में भाजयुमो ने इंदौर में कांग्रेस कार्यालय का घेराव करने की घोषणा की थी। तय कार्यक्रम के अनुसार कार्यकर्ता गांधी भवन पहुंचे लेकिन वहां पहले से भारी पुलिस बल तैनात था। पुलिस ने दोनों ओर बैरिकेडिंग कर रखी थी और कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ने से रोक दिया। इसी दौरान दोनों पक्षों में तीखी नोकझोंक शुरू हो गई।

भोपाल समेत प्रदेश के कई जिलों में भाजयुमो ने किया कांग्रेस कार्यालयों का घेराव

दिल्ली के भारत मंडपम में हुई एआई इम्पैक्ट समिट के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं के अर्धनग्न प्रदर्शन के खिलाफ भारतीय जनता युवा मोर्चा ने आज भोपाल सहित प्रदेशभर के प्रमुख जिलों में स्थित कांग्रेस कार्यालयों का घेराव कर आक्रामक प्रदर्शन किया।भोपाल संभाग के अंतर्गत शनिवार को प्रदेश कांग्रेस कार्यालय शिवाजी नगर चौराहा के पास, भोपाल ग्रामीण में प्रदर्शन किया गया। इसके साथ ही युवा मोर्चा के नेतृत्व में ग्वालियर, मुरैना, सागर, इंदौर, खंडवा, उज्जैन, मंदसौर, रीवा, शहडोल, जबलपुर और छिंदवाड़ा जिलों में कांग्रेस कार्यालयों का घेराव कर विरोध प्रदर्शन किया गया।

कांग्रेस की घटिया कार्यशैली सामने आई

बीजेपी युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्याम टेलर ने बताया कि आज पूरा विश्व भारत की तकनीकी क्षमता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता एआई में नेतृत्व की सराहना कर रहा था। तब राहुल गांधी के इशारे पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने अपनी घटिया कार्यशैली का परिचय देते हुए भारत मंडपम में आयोजित एआई इम्पैक्ट समिट के स्थल के अंदर अर्धनग्न प्रदर्शन कर भारत की छवि धुमिल करने का प्रयास किया है। इस प्रकार के प्रदर्शन से पूरे राष्ट्र का सिर शर्म से झुका है।

नर्सिंग की छात्रा ने फांसी लगाकर किया सुसाइड

● प्रेमी की दूसरी जगह शादी तय होने की बात से दुखी थी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के अयोध्या नगर की विंध्याचल कॉलोनी में रहने वाली नर्सिंग की छात्रा ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। जीजा के भाई से उसका प्रेम संबंध था। हालांकि प्रेमी की पिछले दिनों दूसरी लड़की से शादी तय हो गई। इससे दुखी होकर उसने सुसाइड किया है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। घटना शुक्रवार रात की है। जबकि शनिवार दोपहर को पीएम के बाद बॉडी परिजनों के हवाले कर दी गई। पुलिस के मुताबिक उमा लोधी पुत्री नर्मदा प्रसाद (24) विंध्याचल कॉलोनी अयोध्या नगर में किराए से रहती थी।

नर्स बनने की चाह में भोपाल आई थी

वह मूल रूप से बरखेड़ा हसन जिला सीहोर की रहने वाली थी। उमा चार बहन और 6 भाईयों में आठवें नंबर की थी। उसके रिश्तेदार नरेंद्र ने बताया कि उमा का अपने ही जीजा के भाई से करीबी रिश्ता था। दोनों शादी करना चाहते थे। हालांकि बाद में युवक के परिजनों ने कहीं और उसकी शादी तय कर दी।

युवक ने पूछा था- कोई परेशानी तो नहीं- उमा ने भी इसका विरोध नहीं किया था। अब युवक ने उमा को कॉल कर पूछा कि मैं शादी करने वाला हूं तुम्हे कोई परेशानी तो नहीं है। गुरुवार को आए इस कॉल के बाद से उमा तनाव में थी। परिजनों का मानना है कि इसी डिप्रेशन के चलते उमा ने जान दी है।

मध्यप्रदेश में 4 दिन आंधी-बारिश का अलर्ट

● भोपाल और जबलपुर में सुबह हल्की बरसात; रीवा समेत 5 जिलों में भी आसार

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में 4 दिन आंधी-बारिश का दौर जारी रहेगा। साइक्लोनिक सर्कुलेशन (चक्रवात) और ट्रफ लाइन की एक्टिविटी की वजह से प्रदेश के 20 से ज्यादा जिलों में बारिश हुई। वहीं शनिवार को बादल छाए हुए थे। नए सिस्टम की वजह से 23 और 24 फरवरी को फिर मौसम बदलेगा। ये सिस्टम दक्षिण-पूर्वी जिलों में ज्यादा असर दिखाएगा।

प्रदेश में 3 दिन से आंधी-बारिश वाला मौसम है। कुछ जिलों में ओले भी गिरे हैं। 24 घंटे के दौरान भोपाल, रतलाम, मंदसौर, शाजापुर, धार, इंदौर, रायसेन, उज्जैन, सागर, छतरपुर, शाजापुर समेत 20 से ज्यादा जिलों में बारिश हुई तेज आंधी की वजह से रतलाम, शाजापुर, उज्जैन में फसलों पर असर पड़ा है। यहां गेहूं की फसलें आड़ी हो गई हैं।

इस वजह से दानों पर असर पड़ेगा और किसानों की मुश्किलें बढ़ेंगी। तीन दिन में 25 जिलों में आंधी की वजह से फसलों को नुकसान पहुंचने का अनुमान है।

ऐसे में सरकार ने भी सर्वे शुरू कर दिया है। राजस्व अमला मैदान में उतरकर प्रभावित फसलों का सर्वे कर रहा है।

अगले 2 दिन ऐसा रहेगा मौसम

22 फरवरी- बारिश का अलर्ट नहीं है। इस दिन बादल जरूर छाए रह सकते हैं।

23 फरवरी- दक्षिणी हिस्से में सिस्टम के असर की वजह से बारिश होने का अनुमान है।

एमबीबीएस छात्र को ट्रक ने कुचला...मौके पर मौत

● सड़क पर तड़पता छोड़कर भागा ड्राइवर; आरडी-गार्डी मेडिकल कॉलेज के छात्रों ने चक्काजाम किया

उज्जैन (नप्र)। मध्य प्रदेश के उज्जैन के आरडी गार्डी मेडिकल कॉलेज गेट के सामने तेज रफ्तार ट्रक ने एनबीबीएस छात्र को कुचल दिया। हादसे में छात्र की मौके पर मौत हो गई। हादसे के बाद गुस्साए छात्रों ने चक्काजाम कर दिया। मामला चिमनगंज थाना क्षेत्र के आगर रोड का है। जानकारी के मुताबिक मृतक का नाम हर्षित मेहरा (20) है, जो एमबीबीएस सेकेंड ईयर का छात्र था। हर्षित कॉलेज परिसर के हॉस्टल में रहता था। शनिवार सुबह वह कॉलेज के लिए निकला था। गेट के पास पहुंचा ही था कि ट्रक ने अपनी चपेट में ले लिया। हादसे के बाद ट्रक ड्राइवर सड़क पर तड़पता छोड़कर भाग गया।

इस्तीफे पर हेमंत कटारे का ट्वीट

मैं पद से नहीं, जनता के विश्वास से ताकत लेता हूं.., चौधरी बोले-नियुक्ति खरगे जी ने की वे ही निर्णय लेंगे

भोपाल (नप्र)। भिंड जिले की अटेर सीट से कांग्रेस विधायक और मध्य प्रदेश विधानसभा में उप नेता प्रतिपक्ष हेमंत कटारे के इस्तीफे को लेकर सियासत तेज हो गई है। इस्तीफे की चर्चाओं के बीच कटारे ने सोशल मीडिया पर लंबा पोस्ट कर अपनी स्थिति स्पष्ट की और कहा कि उनकी ताकत किसी पद से नहीं, बल्कि जनता के विश्वास से आती है। बता दें कि एक दिन पहले ही कटारे ने उप नेता प्रतिपक्ष पद से इस्तीफा दिया है। पहले पढ़िए हेमंत कटारे का फेसबुक पोस्ट

कटारे ने लिखा कि कांग्रेस उनके स्वर्गीय पिता की विरासत है। फोन न उठाने को लेकर लग रहे कयासों पर उन्होंने कहा कि शादी की सालगिरह पर परिवार के साथ समय बिताना कोई साजिश नहीं, बल्कि उनका अधिकार है। उन्होंने विपक्षी दल पर निशाना साधते हुए लिखा कि सोमवार से सदन में पूरी तैयारी और दस्तावेजों के साथ उपस्थित रहेंगे तथा सरकार के भ्रष्टाचार और विभिन्न मुद्दों पर आवाज उठाएंगे।

पोस्ट में उन्होंने यह भी कहा कि गोमांस, इंदौर के भागीरथपुरा, शंकराचार्य के अपमान और जहरीली हवा-दवा-पानी जैसे मुद्दों पर वे सरकार को घेरेंगे। अंत में लिखा- मैं पद से नहीं, जनता के विश्वास से ताकत लेता हूं, वही मेरी सबसे बड़ी शक्ति है।

जीतू पटवारी बोले- ट्वीट में सब स्पष्ट- प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी से जब इस्तीफे को लेकर सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि कटारे ने अपने ट्वीट में सारी बातें साफ कर दी हैं। पटवारी के मुताबिक लोकतंत्र में जनप्रतिनिधि जनता के विश्वास से ही काम करता है और कटारे ने जो कहना था, सार्वजनिक रूप से कह दिया है।

विधानसभा में सरकार ने कबूला सच

मप्र में 'लापता लेडीज' का सच, हर दिन गायब हो रहीं 130 बेटियां

भोपाल(नप्र)। मध्य प्रदेश में हर दिन लगभग 130 महिलाओं और लड़कियों के लापता होने की चौंकाने वाली जानकारी सामने आई है। यह आंकड़ा 2020 से 28 जनवरी 2026 तक का है। इस दौरान कुल 2,74,311 महिलाएं या लड़कियां गायब हुई हैं। यह जानकारी मुख्यमंत्री मोहन यादव द्वारा विधानसभा में दिए गए एक लिखित जवाब से सामने आई है, जिसमें यह भी बताया गया है कि इनमें से 2,35,977 को ट्रेस कर लिया गया है, लेकिन 68,334 महिलाएं और लड़कियां अभी भी लापता हैं। यह स्थिति चिंताजनक है और हर साल 30,000 से अधिक महिलाओं के लापता होने के पैटर्न को उजागर करती है, जिसमें 2021 में यह संख्या 39,000 से अधिक और 2023 में 40,000 को पार कर गई थी।

इन शहरों में हालात चिंताजनक

प्रमुख शहर जैसे इंदौर, भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर और उज्जैन लगातार उच्च संख्या दर्ज कर रहे हैं। इसके अलावा, कई आदिवासी और सीमावर्ती जिलों में भी रिपोर्ट किए गए और ट्रेस किए गए मामलों के बीच चिंताजनक अंतर दिखाई देता है। इन आंकड़ों ने मानव तस्करी नेटवर्क, जबरन विवाह, शोषण और ट्रैफिकिंग तंत्र में प्रणालीगत कमजोरियों के बारे में गंभीर चिंताएं पैदा की हैं। विक्रांत भूरिया, विधायक, कांग्रेस ने कहा जब हजारों महिलाएं लापता हैं और उनका कोई सुराग नहीं मिल रहा, तो यह सिर्फ कानून-व्यवस्था का मुद्दा नहीं है। यह एक ढांचागत विफलता है। हम इसे सामान्य गुमशुदगी की रिपोर्ट नहीं मान सकते। यह अंतरराष्ट्रीय शोषण कांडों जैसा मानवीय संकट है। कांग्रेस विधायक विक्रांत भूरिया ने इस मुद्दे को उठाते हुए कहा कि जब लाखों महिलाएं लापता हैं, तो यह केवल कानून और व्यवस्था का मामला नहीं है। उन्होंने कहा, जब लाखों महिलाएं ट्रेस नहीं हो पा रही हैं, तो यह सिर्फ कानून और व्यवस्था का मुद्दा नहीं है। यह एक संरचनात्मक विफलता है। हम इसे नियमित गुमशुदगी की रिपोर्ट के रूप में नहीं मान सकते।

हर साल 45000 महिलाएं होती हैं लापता

यह स्थिति तब और गंभीर हो जाती है जब हम इसे सालाना आंकड़ों में देखते हैं। आंकड़ों की मानें तो हर साल लगभग 45,000 महिलाएं लापता हो जाती हैं, जो महीने का लगभग 3,700 और रोज का लगभग 130 होता है। यह पैटर्न पिछले छह वर्षों से लगातार बना हुआ है। 2020 में 30,000 से अधिक महिलाएं लापता हुईं। 2021 में यह संख्या बढ़कर 39,000 से अधिक हो गई। 2023 में, यह आंकड़ा फिर से 40,000 को पार कर गया। यहां तक कि 2025 में भी, 31,000 से अधिक मामले दर्ज किए गए।

पूरा मामला ऐसा है

- मुख्यमंत्री मोहन यादव ने विधानसभा में लिखित जवाब में पुष्टि की है कि 2020 से 28 जनवरी 2026 तक 2,74,311 महिलाएं लापता हुईं।
- औसतन हर साल 45,000 और हर महीने 3,700 महिलाएं गायब हो रही हैं, जो राज्य की कानून व्यवस्था पर बड़ा सवाल है।
- इंदौर, भोपाल, ग्वालियर और जबलपुर जैसे बड़े शहरों के साथ-साथ आदिवासी जिलों में भी महिलाओं के गायब होने का ट्रेंड डराने वाला है।
- कुल लापता महिलाओं में से करीब 68,334 का अब तक पता नहीं चल पाया है, जिससे मानव तस्करी और शोषण की आशंका बढ़ गई है।
- साल 2026 के शुरुआती कुछ ही हफ्तों में 1,000 से ज्यादा महिलाएं लापता हो चुकी हैं, जो बताता है कि स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है।

भोपाल एम्स में अब मरीजों को एआई बताएगा रास्ता

ऐसा करने वाला देश का पहला अस्पताल; रोजाना 10 से 12 हजार लोगों को होगा फायदा

भोपाल (नप्र)। भोपाल एम्स अब देश का पहला ऐसा अस्पताल बनने जा रहा है, जहां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई, मरीजों और उनके परिजन को रास्ता बताएगा। रोजाना 10 हजार से ज्यादा लोग इस परिसर में इलाज, जांच और परामर्श के लिए पहुंचते हैं।

एक जैसी दिखने वाली इमारतों और बड़े कैंपस के कारण लोग अक्सर भटक जाते हैं। इसी समस्या को दूर करने के लिए अब गूगल मैप की तरह मोबाइल पर ही पूरा नेविगेशन मिलेगा। डिप्टी डायरेक्टर संदेश जैन बताते हैं-क्यूआर कोड स्कैन करते ही मरीज को यह पता चल जाएगा कि कार्डियोलॉजी, अमृत फार्मेसी, न्यूरो सर्जरी, पैथोलॉजी, एमआरआई या डॉक्टर का कक्ष आखिर किस दिशा में है।

बिल्डिंग की डिजाइन ऐसी कि एआई का सहारा लेना पड़ा- भोपाल एम्स का परिसर काफी बड़ा है। अस्पताल भवनों की अंदरूनी बनावट एक जैसी है। अलग-अलग ब्लॉक हैं, लेकिन सब एक जैसे नजर आते हैं, रास्ते भी एक जैसे हैं। ऐसे में बार-बार आने पर भी मरीजों और उनके परिजन को सही विभाग तक पहुंचने में परेशानी होती है।

वहीं, पहली बार आने वाले मरीजों का पैथोलॉजी, एमआरआई, ओपीडी या वार्ड ढूंढ़ने में ही काफी समय लग जाता है। बार-बार स्टाफ या सुरक्षाकर्मियों से रास्ता पूछना पड़ता है।इससे न केवल समय बर्बाद होता है, बल्कि मरीज और परिजन तनाव भी महसूस करते हैं। इसलिए अब इस समस्या को दूर करने के लिए एआई का सहारा लिया जा रहा है।

एआई आधारित नेविगेशन सिस्टम बना रहे- इसी समस्या को दूर करने के लिए एम्स भोपाल ने आईआईटी इंदौर की दृष्टि टीम के साथ मिलकर स्मार्ट मार्गदर्शन प्रणाली विकसित करने की पहल की है। भोपाल के एक स्टार्टअप की मदद से एआई आधारित नेविगेशन सिस्टम तैयार किया जा रहा है। यह सिस्टम गूगल मैप की तरह काम करेगा। एम्स के मोबाइल एप या परिसर में लगाए गए क्यूआर कोड को स्कैन करने के बाद व्यक्ति जिस स्थान पर जाना चाहता है, उसे सर्च करेगा। इसके बाद एआई उसे चरणबद्ध तरीके से सही रास्ता दिखाएगा।

एक माह का पायलट, फिर पूरे परिसर में लागू- इस प्रोजेक्ट को शुरुआत में एक माह के पायलट की तरह लागू किया जाएगा। इस दौरान यह देखा जाएगा कि सिस्टम कितना प्रभावी है और लोगों को कितना फायदा हो रहा है।

क्यूआर कोड और मोबाइल ऐप से मिलेगा रास्ता

इस प्रणाली के दो स्वरूप होंगे। पहला वेब आधारित होगा। एम्स के मुख्य प्रवेश द्वार और प्रमुख स्थानों पर क्यूआर कोड लगाए जाएंगे। जैसे ही कोई व्यक्ति क्यूआर कोड स्कैन करेगा, उसके मोबाइल पर इंटरैक्टिव मैप खुल जाएगा।

दूसरा स्वरूप मोबाइल ऐप आधारित होगा। यूजर ऐप डाउनलोड कर सीधे नेविगेशन का लाभ ले सकेंगे। भवनों के बीच पहुंचने के लिए जीपीएस तकनीक का उपयोग होगा। भवनों के अंदर, जहां जीपीएस की सटीकता कम हो जाती है, वहां हर 15 मीटर पर रिले सिस्टम लगाए जाएंगे। ये उपकरण मोबाइल को सटीक दिशा-निर्देश देंगे, जिससे व्यक्ति बिना भटके सही जगह पहुंच सकेगा।

भोपाल के आईटी पार्क में माली की करंट से मौत

● पेशाब के लिए गए थे, खुले तार की चपेट में आने से झुलसे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के आईटी पार्क में माली का काम करने वाले बुजुर्ग की शनिवार दोपहर करीब 12 बजे करंट की चपेट में आने से मौत हो गई। वह गार्डन के करीब एक कोने में दीवार के सहारे पेशाब करने गए थे। यहां पहले एक खुला हुआ तार पड़ा था, जिसकी चपेट में आने से बुजुर्ग गंभीर रूप से झुलस गए। तत्काल उन्हें हमीदिया अस्पताल पहुंचाया गया। जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। गांधी नगर पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक मलखान सिंह (60) आईटी पार्क में माली की नौकरी करते थे। पौधों को पानी देने के बाद दोपहर करीब 12 बजे एक कोने में पेशाब करने पहुंचे।

● **साथी ने सबसे पहले देखा था-** जहां एक तार टूटा और खुला हुआ पड़ा था। इसकी चपेट में आते ही बुजुर्ग को जोरदार शॉक लगा। चंद मिनट बाद एक साथी ने उन्हें झुलसी हुई हालत में जमीन पर पड़ा देखा। तत्काल अन्य कर्मचारियों की मदद से अस्पताल पहुंचाया गया। जहां कुछ ही देर चले इलाज के बाद उनकी मौत हो गई। शनिवार की दोपहर तीन बजे पीएम के बाद बॉडी परिजनों को सौंप दी गई है।

पुस्तक समीक्षा

नृपेन्द्र अभिषेक नृप
समीक्षक

जीवन की तलाश में संध्या की 'नयी राहें'

'नयी राहें' शीर्षक अपने आप में बहुअर्थी और प्रतीकात्मक है। यह केवल सामाजिक या भौतिक परिवर्तन का संकेत नहीं देता, बल्कि जीवन के भीतर जाग्रत होती नई चेतना, आत्मविश्वास और मानवीय मूल्यों की खोज का रूपक बन जाता है। संग्रह की कहानियाँ पाठक को केवल कथा-रस का अनुभव नहीं करातीं, बल्कि उसे सोचने, ठहरने और आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती हैं। संध्या अग्रवाल की लेखनी की विशेषता यह है कि वह उपदेशात्मकता से दूर रहते हुए भी अपने कथ्य को प्रभावशाली और स्मरणीय बना देती हैं। 'नयी राहें' पाठक को सोचने, महसूस करने और जीवन के नए अर्थ खोजने के लिए प्रेरित करती है।

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में संध्या अग्रवाल एक ऐसी संवेदनशील और सजग लेखिका के रूप में उभरती हैं, जिनकी लेखनी जीवन के सूक्ष्मतम अनुभवों को गहरी मानवीय अनुभूति के साथ शब्द देती है। उनका कहानी-संग्रह 'नयी राहें' केवल कथाओं का संकलन नहीं, बल्कि जीवन, समाज और मनुष्य के अंतर्मन से संवाद करने वाला एक सशक्त साहित्यिक दस्तावेज है। इन कहानियों में यथार्थ की कठोरता के साथ संवेदना की कोमलता और संघर्ष के बीच आशा की उजली रेखा स्पष्ट दिखाई देती है।

'नयी राहें' शीर्षक अपने आप में बहुअर्थी और प्रतीकात्मक है। यह केवल सामाजिक या भौतिक परिवर्तन का संकेत नहीं देता, बल्कि जीवन के भीतर जाग्रत होती नई चेतना, आत्मविश्वास और मानवीय मूल्यों की खोज का रूपक बन जाता है। संग्रह की कहानियाँ पाठक को केवल कथा-रस का अनुभव नहीं करातीं, बल्कि उसे सोचने, ठहरने और आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती हैं। संध्या अग्रवाल की लेखनी की विशेषता यह है कि वह उपदेशात्मकता से दूर रहते हुए भी अपने कथ्य को प्रभावशाली और स्मरणीय बना देती हैं। 'नयी राहें' पाठक को सोचने, महसूस करने और जीवन के नए अर्थ खोजने के लिए प्रेरित करती है।

इस संग्रह की कहानियाँ समाज के उन सूक्ष्म और अक्सर उपेक्षित पक्षों को सामने लाती हैं, जो सामान्य दृष्टि से ओझल रह जाते हैं। यहाँ स्त्री-मन की पीड़ा, संघर्ष और आत्मनिर्भरता की आकांक्षा के साथ-साथ उसकी जिजीविषा और आत्मसम्मान की चेतना भी उपस्थित है। पारिवारिक संबंधों की ऊष्मा, उनमें छिपी दरारें, पीढ़ियों के बीच बढ़ती दूरी और बदलते सामाजिक

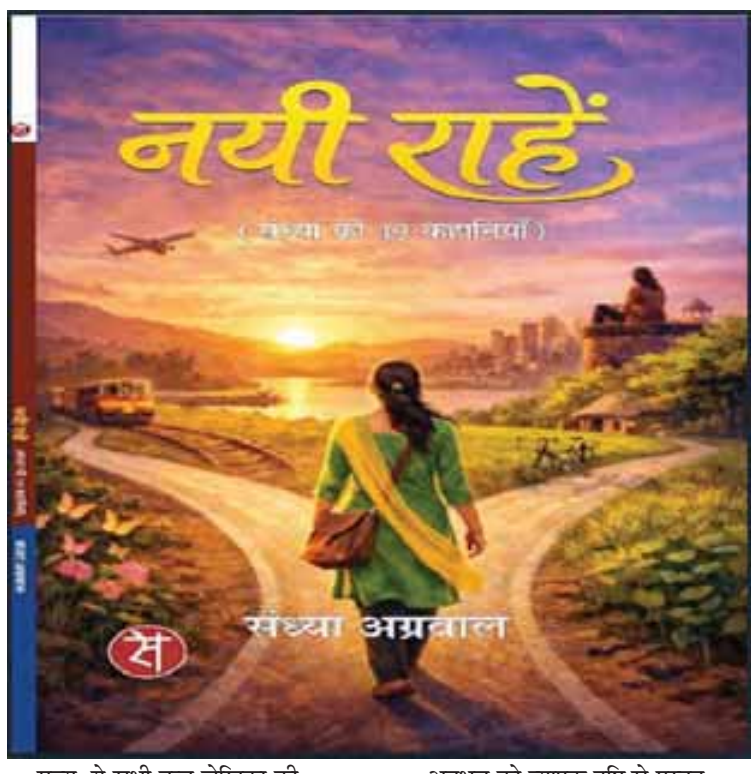

मूल्य, ये सभी तत्व लेखिका की कथाओं में अत्यंत संवेदनशीलता और प्रामाणिकता के साथ उभरते हैं। यह संग्रह केवल स्त्री-विमर्श तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समूचे मानवीय अनुभव को व्यापक दृष्टि से प्रस्तुत करता है।

संध्या अग्रवाल की भाषा इस संग्रह की प्रमुख शक्ति है। उनकी भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और साहित्यिक गरिमा से युक्त है। वे शब्दों के माध्यम से जीवन के सूक्ष्म भावों को इस तरह पिरोती हैं कि पाठक अनायास ही कथा-प्रवाह में बहने लगता है। संवादों की स्वाभाविकता, भावों की गहराई और परिवेश का जीवंत चित्रण उनकी कहानियों को विश्वसनीय और प्रभावशाली बनाता है। उनके यहाँ परिवेश केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि कथा का सक्रिय घटक बन जाता है, जो पात्रों के मनोविज्ञान को और अधिक स्पष्ट करता है।

इस संग्रह की कहानियाँ जीवन के संघर्षों से पलायन नहीं करतीं, बल्कि उनसे जूझने की प्रेरणा देती हैं। निराशा के बीच आशा, टूटन के बीच संबल और अंधेरे के बीच नई राहों की तलाश, यही इन कथाओं का मूल स्वर है। लेखिका यह स्पष्ट करती हैं कि जीवन एकरैखिक नहीं होता; उसमें विरोधाभास, असफलताएँ और ठोकरें अनिवार्य हैं, परंतु इन्हीं अनुभवों के बीच मनुष्य अपने लिए नई दिशाएँ खोजता है। यही भाव 'नयी राहें' को केवल साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

यह पुस्तक पाठक की संवेदनशीलता को जाग्रत करता है। आत्मकेंद्रित होते समय में ऐसी कहानियाँ मनुष्य को दूसरों के दुख-दर्द से जोड़ती हैं और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना करती हैं। युवा पाठकों के लिए ये कथाएँ जीवन की वास्तविकताओं से परिचय कराती हैं, जबकि परिपक्व पाठकों के लिए आत्मावलोकन का अवसर प्रदान करती हैं। इस दृष्टि से 'नयी राहें' केवल पढ़ने का सुख नहीं देती, बल्कि सोचने और बदलने की प्रेरणा भी देती है।

वास्तव में संध्या अग्रवाल का यह कहानी-संग्रह हिंदी कथा-साहित्य में एक सार्थक और संवेदनशील उपस्थिति दर्ज कराता है। 'नयी राहें' जीवन के उन अनकहे पक्षों को स्वर देती है, जो अक्सर हमारे भीतर दबे रह जाते हैं। यह संग्रह पाठक को अपने भीतर झाँकने, अपने प्रश्नों से संवाद करने और अपनी-अपनी नई राहें खोजने का साहस प्रदान करता है। लेखिका को इस उत्कृष्ट कृति के लिए हार्दिक बधाई, निस्संदेह यह संग्रह पाठकों के मन में अपनी स्थायी जगह बनाएगा और समकालीन हिंदी साहित्य को नई ऊर्जा प्रदान करेगा।

पुस्तक-नयी राहें
लेखिका - संध्या अग्रवाल
प्रकाशन- समृद्ध पब्लिकेशन, दिल्ली
मूल्य-235 रुपये

व्यंग्यिका

कैसा ये दौर ए दस्तूर

अनुपमा अनुश्री

अपने लिए कोई
गाइडलाइन तय की नहीं !
कोई आदर्श फॉलो किया नहीं
जीवन मूल्यों को न समझा
न अपनाया
शिक्षक , उपदेशक बन गए!!
कोई संघर्ष शामिल हुआ नहीं
जीवन को अनुभव किया नहीं!
बस एक ही चीज सीख ली
पैसा कमाने की दौड़,
दिखावा ,आडंबर, बनावट ,
होड़, नकलीपन,
बकबक और शोर!

देख- देख के ये दौर ,
हो जाते हैं बोझिल और बोर
बिना अनुभव, यह कैसी बकबक!
बिना तपे, ये कैसा सोना!
बिना सत्य, ये कैसी चमक!
बिना तराशे,यह कैसा कोहिनूर !
बिना मेहनत, कैसा धन!
बिना परहित, ये कैसा जीवन!
बोलचाल में मर्यादा, विनम्रता ,सभ्यता बिना
यह कैसी समझाइश!
दूसरों से अच्छे व्यवहार की
फिर कैसी फरमाइश!
बिना श्रेष्ठ विचार, संस्कार ,
अच्छे कर्म और व्यवहार
ये कैसी स्टाइल!!
बेईमानी, झूठ , फैशन,
फरेब है करीब
अपनों और अच्छे गुणों
से हैं गरीब!
यह कैसी लहर है!
भटकाव , बिखराव में
डूबा अपना ही घर है!
फेक जीवन को कहीं फेंक दो !
असलियत अपनाकर
खरा सोना बनो।
झूठी बातों में व्यर्थ न इतराओ
ब्रह्मांड में सच्चाई, ईमानदारी ,
प्रेम ,परोपकार की
वाइब फैलाओ।
भारत के इतने समृद्ध ज्ञान,
संस्कृति,भाषा, मर्यादा को
तोड़ -मरोड़ कर
झूठी स्टाइल और
धुएँ में मत उड़ाओ
अभी भी वक्त है सुधर जाओ।
जीवन को सही दिशा देने के लिए,
हमारे समृद्ध शास्त्र
और वांग्मय पढ़ो
सद्ज्ञान रूपी मोती चुनो
हर किसी की बातों , प्रवचन,
झूठ उपचार,दिखावे मे पडकर
धोखा मत खाओ।
कि कर्मों की गति बड़ी है।
नीयत सही हो तो
नियति भी साथ देती है।

कहानी

अमर चड्ढा

कुछ बातें

कॉलेज में छुट्टियां लग गई थीं। मैं एक परिवारिक शादी में शरीक होने यूसए अपनी मासी के पास चली आई। मैं इस वक्त समुन्द्र में पानी के जहाज़ पर हूँ क्यों मुझे कुछ बातें देर से समझ आती हैं। अचानक उसका ख्याल क्यों कर आया। क्या कर रहा होगा वह इस वक़्त? कॉलेज पीछे छूट गया था पर आखिरी दिन याद आ गया।क़्या चल रहा था यहाँ? क्लासरूम इतना गंदा कर रखा है?

डिसिप्लिन का मारा इंसान थोड़ा रूखा सूखा हो जाता है।फिर जब उसके हिसाब से काम नहीं होता तो आफ़त किसी न किसी पर आ पड़ती है।उबासियाँ लेती क्लास का सेंटर ऑफ़ अट्रैक्शन भी बदल जाता है और खिड़कियों से यह दृश्य देख रहे, ताकने-झांकने वालों की निगाहें और मुस्कुराहटें कितने दिनों तक फ़ेविकोल की तरह चिपकी रहती हैं ।टेबल औंधे मुँह गिरने को पड़ा था।चॉक कुचल गई थी।अपने कड़क स्वभाव और अनुशासन के लिए अप्रिय पर्सनालिटी की गिनती में आते थे। सर क्लासरूम में आ चुके थे।

मैं सामने के बेंच पर बैठी थी। टेबल पर सैंडल के निशान दिख रहे थे। दस मिनट पहले ही क्लास में जब हम कुछ लड़कियाँ थीं पास किसी लाउड्स्पीकर पर बज रहे गाने की धुन थिरक रही थीं। पहल मैंने ही की थी ,इसलिए कुछ निगाहें और मेरे ग्रूप की तरफ़ उठीं।

सर टेबल हिला कर देख रहे थे, जिसकी चूलें हिलने लगीं थी।थैंक गॉड मैं सही समय पर उतर गई। जिस दरख्त से यह टेबल बना होगा उसमें जीतू लव्ज़ रेखा नहीं लिखा होगा। यदि ऐसा कुछ लिखा भी होगा तो कड़क बिजलियाँ न गिरी होंगी। तूफ़ानी बारिशों में आधी तरफ़ से भीगा होगा।तपती धूप सीधी न पड़ी होगी।टेबल बन जाने पर कारीगर ने बारंबार मरम्मत के पैसे बनाने के लिए अपने मन की खोट लिए छोटी कील फँसाई हो।वैसे खोट बड़ी हो तो कील भी बड़ी होनी चाहिए थी।मैं मन ही मन सोच रही थी तभी सिर झुका कर मेरी दोस्त ने मुझसे कुछ कहना चाहा था ।मैं अपने ही ख़्यालों में थी ।मेरे मुँह से बेसाख़्ता शब्द निकल पड़े. ÷कच्चे प्यार की निशानी लेकर कट गया होगा।÷पिन ड्रॉप साइलेन्स के कारण वे शब्द खनक गये।

बात सबको सुनाई देकर ठहाकों में बदल गई।आज के दिन की भड़ास के लिए यह समय और टॉपिक दोनों पर्याप्त थे ।

कहाँ से पढ़ाई की है ? यही सीख मिली है अब तक ? इन झिड़कियों से बात शुरुआत होकर क्या ख़ाक करोगे ज़िंदगी में÷ तक पहुँच रही थी।

आज तक किसी से डाँट नहीं सुनी कम से कम इस कॉलेज में तो नहीं।

कोई मुझ पर हँस रहा था।यूँ भी और कनखियों से भी।कुछ पलों के लिए जैसे सारी निगाहें मुझ पर टिक गईं।पहले वह हँसा फिर सब लोग हँसे और सबकी हँसी पहले हवा में घुली फ़िर दीवारों के कान तक पहुँची आख़िर में ज़मीन पर छन्न से गिरी।मेरे कानों तक शोर पहुँच रहा था।गाल अंगारे से दहकने लगे।मेरी आँखों में सामने रौशनी चौंधिया रही थी।इक तरफ़ मेरी नज़रों को छुपने के लिए एक बुरक़ा चाहिए था दूसरी तरफ़ ऐटिट्यूड था।मेरी हाई हील की सैंडल जिद में अड़ी खडी थी।मेरे लम्बे घने बाल कायदे से बंधे हुए थे।मेरी पीठ उसकी तरफ़ थी फिर भी मैं उसकी निगाह देख पा रही थी।मैं पीछे मुड़ी उसे शून्य निगाहों से देखा उसकी आँखें शरारती तारों की चमक से भरीं थी ।उनचास लोग और भी हंस रहे थे पर उस दिन उसके ठहाकों पर मैंने पैनी नज़र क्यों डाली?

अपनी जिद या मांगों को पूरी करने के लिए लोग जमीं पर लोट लगाते हैं।मेरी प्यास समंदर में लोटें लगा रही है। मैं इस वक्त समुन्द्र में पानी के जहाज़ पर हूँ। क्यों मुझे कुछ बातें देर से ...।

ग़ज़ल

ख्वाबों में

कमलेश कुमार दीवान

ख्वाबों में ख्यालों से उड़े जा रहा हूं मैं
इस उस हवा के साथ मुड़े जा रहा हूं मैं।

बादल कभी बीच में गहरी झील से लगे
रूई से पहाड़ खुद ही चढ़े जा रहा हूं मैं।

हद ए निगाह में ये कायनात आ गई
घनघोर अंधेरे ऐसे ही बड़े जा रहा हूं मैं।

हेली कामेट घूमते ब्लेक होल में पहुंचा
घनघोर अंधेरा और जड़े जा रहा हूं मैं।

गैस के गुबार धूल धुंध में भी है ?'दीवान'
जागा तो ख्वाव सर पे मढ़े जा रहा हूं मैं।

हद ए निगाह-दृष्टि की सीमा,जहां तक दिखाई दे
हेली कामेट -पुच्छल तारा

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

बाल कहानी

प्रगति त्रिपाठी

सुरसा

मम्मा आपने कहा था ना कि आज हम बाहर खाना खाने जाएंगे? फिर आप अभी तक तैयार क्यों नहीं हुई? तेजस ने अनमनाते हुए कहा।

हां बेटा! कहा तो था लेकिन देखो ना! कल त्यौहार है और ये काम है कि सुरसा जैसे मुंह फैलाए हुए खड़ी है, खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही। अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करूं?। सुबह से काम में लगी मम्मा ने कहा।

सुरसा जैसे मतलब? तेजस ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

तुम सुरसा को नहीं जानते ?
नहीं, कौन है सुरसा?

सुरसा एक नाग माता थी। उसने राक्षसी बनकर हनुमान जी की परीक्षा ली थी।

आप मुझे ये कहानी सुनाओ ना मम्मा? तेजस ने जिज्ञासावश कहा।

सुनो, जब रावण, सीता जी का हरण कर उन्हें लंका ले गया था तब वहां पहुंचने का एकमात्र रास्ता हिंद महासागर था। राम जी ने हनुमान जी को अपनी अंगुठी दी और लंका जाने का आदेश दिया। जैसे ही हनुमान जी उड़े वैसे ही समुद्र में भारी गर्जना हुई और नागों की माता सुरसा एक राक्षसी के रूप में प्रकट हुई और हनुमान जी का रास्ता रोककर बोली, देवताओं ने तुम्हें मेरे भोजन के लिए भेजा है, मैं तुम्हें खाऊंगी। हनुमान जी ने हाथ जोड़ते हुए कहा कि वो सीता माता को खोजने निकले हैं कृपया उन्हें जाने दे लेकिन सुरसा नहीं मानी।

फिर क्या हुआ मम्मा? तेजस की उत्सुकता बढ़ती ही जा रही थी।

फिर... फिर सुरसा ने कहा कि उसे

ब्रह्मा जी से वरदान मिला है कि उसे लांघकर कोई नहीं जा सकता। उसने हनुमान जी को खाने के लिए विशाल मुंह खोल दिया। हनुमान जी ने भी अपना आकार बढ़ा दिया। सुरसा ने भी अपना आकार और बढ़ा दिया। तब हनुमान जी ने इस विपत्ति से निपटने के लिए अपनी बुद्धि का सहारा लिया और हनुमान जी ने अति सूक्ष्म रूप धरकर सुरसा के मुंह के अंदर प्रवेश करके बाहर निकल गए और बोले माता मैंने आपकी आज्ञा का पालन कर दिया, अब आप मुझे जाने की अनुमति दे।

सुरसा हनुमान जी की बुद्धि और शक्ति देखकर बोली मैं तुम्हारी परीक्षा ले रही थी। तुम सफल हुए। मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूं कि तुम अपने कार्य में सफल होगे। हनुमान जी उनको प्रणाम करके आकाश में उड़ गए। वाह! हनुमान जी बहुत शक्तिशाली थे। तेजस ने कहा

और बुद्धिमान भी मम्मा तेजस के सर पर हाथ फेरते हुए बोली।

अब ये बताओ कि इस कहानी से तुम्हें क्या सीख मिली?

हम अपनी बुद्धि का प्रयोग करके बड़ी से बड़ी विपत्ति का सामना कर सकते हैं।

बहुत बढ़िया। उसके बाद लोग बड़े या अंतहीन काम को सुरसा की मुंह के जैसे की उपमा देने लगे और रोजमर्रा की जिंदगी में इसका प्रयोग करने लगे। समझे?

हां मम्मा समझ गया।

सुरसा की कहानी बताते हुए मम्मा ने घर में ही तेजस का फेवरेट वेजिटेबल पुलाव बना दिया। तेजस बहुत खुश हो गया।

इस तरह तेजस को रामायण के इस प्रसंग के साथ एक नई जानकारी मिल गई।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

चलती-फिरती नाव और शार्ल दोबिन्यी की कला

प्रकृति का सानिध्य खूब भाता था और वो अपने विधा में, किसी न किसी रूप में प्रकृति का प्रयोग करते भी थे, प्रकृति की अनुकृति करते थे। कला भी हमेशा से प्रकृति के इर्द-गिर्द ही घूमती रही है हाँ कभी-कभी कुछ विशेष वाद के कारण कुछ कलाकार प्रकृति से दूर, कुछ इतर करने का प्रयास भी करते हैं, पर जिस प्रकार बिना भोजन जीवन मुश्किल है ठीक वैसे ही प्रकृति बिना कई काम मुश्किल है। कला के साथ भी कुछ ऐसा ही है। प्रत्यक्ष न सही अमूर्त या आधुनिक रूप में ही सही पर प्रकृति का होना अनिवार्य सा है लगभग हर कृतियों में। ऐसा कोई भी मूल नहीं है जिसका प्रयोग कृतियों में किया जाय और वो प्रकृति में ना हो। कुछ कलाकार तो ऐसे भी हुए जो प्रकृति को मानवीय भावनाओं की भांति गहराई तक उतर कर नाजुक और संवेदनशील अवस्था में उनका अंकन करते हैं, निर्जीव में भी सजीवता, जीवटता प्रदर्शित होने लगती है और ऐसे ही कृतियों को देखकर दर्शक भावविभोर हुए बिना नहीं रह सकते।

भास्कर के प्रकाश का प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ने लगा था, अंधकार घने से छँटकर सूक्ष्मतम अवस्था तक पहुँचने को था। इस बढ़ने घटने के बीच सबसे बढ़िया जो घट रहा था वो था प्राकृतिक मनोहरता में निरंतर विकास का क्रम। कल-कल करती हवाएँ शांत पड़ी नदी के जल को जब हौले से स्पर्श करतीं तो मानों उनमें भी चुहलता भर जाती थी और इठलाते और लजाते हुए एक ओर को सिकुड़ जाती थीं फलतः जल में एक आकृति उतर जाने सा आभास होता और यही प्रक्रिया जब बार-बार होने लगती तो निरंतरता से सुंदरता में चार चाँद लग जाता। पेड़ पौधे जो नदी के किनारे तने खड़े थे जल के धारा में नाचते से जान पड़ने लगते थे। डोल रहे हों जैसे। नदी में नावों की चहलकदमियाँ भी लोगों को आकर्षित करने हेतु काफी थीं। उन्हीं नावों में एक नाव ऐसी भी थी जिसके भीतर रंगों के छोटे-छोटे डिब्बे, ईजल, बोर्ड और बड़े-छोटे ब्रशों का झुंड था, जहाँ से नजर रखी जा रही होती थी इन पल-पल बदलते प्रकाश और छाया के बारीक परिस्थितियों पर, जहाँ आए दिन सुंदर-सुंदर कृतियों का सृजन हो रहा होता था और जिसका नाम दिया गया था ले बोटिन?। जी हाँ ये था चलता-फिरता स्टूडियो, नाव स्टूडियो। कलाकार शार्ल दोबिन्यी का पूरा रचना संसार बसता था इस नाव में।

कलाकार दोबिन्यी को भी बार्बिजां के रूसो की तरह – प्रकृति का सानिध्य खूब भाता था और वो अपने विधा में, किसी न किसी रूप में प्रकृति का प्रयोग करते भी थे, प्रकृति की अनुकृति करते थे। कला भी हमेशा से प्रकृति के इर्द-गिर्द ही घूमती रही है हाँ कभी-कभी कुछ विशेष वाद के कारण कुछ कलाकार प्रकृति से दूर, कुछ इतर करने का प्रयास भी करते हैं, पर जिस प्रकार बिना भोजन जीवन मुश्किल है ठीक वैसे ही प्रकृति बिना कई काम मुश्किल है। कला के साथ भी कुछ ऐसा ही है। प्रत्यक्ष न सही अमूर्त या आधुनिक रूप में ही सही पर प्रकृति का होना अनिवार्य सा है लगभग हर कृतियों में। ऐसा कोई भी मूल नहीं है जिसका प्रयोग कृतियों में किया जाय और वो प्रकृति में ना हो। कुछ कलाकार तो ऐसे भी हुए जो प्रकृति को मानवीय भावनाओं की भांति गहराई तक उतर कर नाजुक और संवेदनशील अवस्था में उनका अंकन करते हैं, निर्जीव में भी सजीवता, जीवटता प्रदर्शित होने लगती है और ऐसे ही कृतियों को देखकर दर्शक भावविभोर हुए बिना नहीं रह सकते।

कलाकार शार्ल दोबिन्यी ऐसे ही कलाकारों में थे जो नाव पर यात्रा करके कृतियों का निर्माण किया करते थे, जिन्हें जंगलों से ज्यादा नदियों के किनारों ने आकर्षित किया, जिनके कृतियों में खेत झोपड़ियाँ गायें, बत्तख, हरे-

भरे जंगल और इस परिवेश में अपने कार्य में लीन लोग हैं।

बार्बिजाँ गाँव जो फाँतेनब्लो वन के सीमा पर बसा हुआ था, कुछ कलाकारों को वहाँ का दृश्य इतना पसंद आया कि वहीं के होकर रह गये और चित्रकारी में रमे रहें। दोबिन्यी भी ऐसे ही कलाकारों में से थे।

चित्रकारी परिवेश में पले बढ़े कलाकार शार्ल दोबिन्यी बार्बिजाँ कलाकारों में सबसे अधिक प्रसिद्धि प्राप्त करने में सफल रहे, इनका जन्म पेरिस में 15 फरवरी, 1817 में हुआ था। पिता, चाचा और चाची के कलाकार होने का असर इनके कलाकार जीवन पर भी पड़ा। शुरुआती कला यात्रा पारंपरिक शैली में रही पर जल्दी ही बाहर की यात्रा और बार्बिजाँ में बसने के चलते उनके कला में परिवर्तन देखने को मिला और वे प्रकृति के दुलारे एवं संवेदनशील कलाकार बन गये।

पेरिस के परिदृश्य पर लगातार काम करते रहने वाले कलाकार दोबिन्यी कई बार अपने चित्रों को सैलून में प्रदर्शित कर पाने में असफल रहे पर प्रकृति और बार्बिजाँ को लेकर उनके मन में प्रेम कम नहीं हुआ हालांकि परिवार चलाने हेतु एचिंग, वुडकटिंग, प्रिंटमेकिंग, लिथोग्राफी भी करनी पड़ी, बाद में इन माध्यमों के काम भी काफी प्रसिद्ध हुए। आप इस बीच भी लगातार सक्रिय रहे। बाद में आप की कृतियाँ कई वर्षों तक निरंतर सैलून में प्रदर्शित हुई। फ्रांसीसी सरकार द्वारा लीजन ऑफ ऑनर के अधिकारी के रूप में भी आपको नामित किया गया था। कलाकार थियोडोर रूसो, जूल्स डुप्रे, क्लोद मोने, पॉल सेजान, पॉल देलारोस और ग्युस्ताब कुर्बे जैसों से परिचित होने के बाद आपके कृतियों में समय-समय पर और भी परिवर्तन देखने को मिले। जिनेवा में भी आपके स्केचिंग की बात है। स्टूडियो के जैसे बनायी गयी नाव बार्ज ले बोटिन खरीदने के बाद आप उसमें यात्रा के दौरान भी कृतियों के सृजन में लगे रहे फलतः सीन, ओइस नदी और उनके किनारे के स्थान आपके पसंदीदा कला स्थान बन गये, पेंसिल से बना चित्र द बोटिन जिस पर बैठकर ये कृतियाँ बनाते थे बहुत ही स्ट्रोकफुल बन पड़ा है। नाव के और भी कई चित्र बड़े ही सुन्दर हैं।

दोबिन्यी के कृतियों में शांत नदियों और शांत जल के दृश्य हैं। कोमल, वास्तविक, आंखों को सुकून देने वाला प्रकाश है। खुला और विस्तृत फैलाव के साथ आकाश है। सहज, संतुलित पर जबरदस्त स्ट्रोक है तो लय के मानिंद भी धनी कृतियाँ हैं दोबिन्यीं की। नाव पर सवार होकर यात्रा करने का प्रतिफल यह रहा कि इनके कला में प्रकाश और क्षणिक वातावरण को पकड़ने की एक नई शैली विकसित हो गई थी, जो आगे चलकर प्रभाववादी चित्रकारों की भी विशेषता बनी। कलाकार दोबिन्यी बहुत ही सरल, विनम्र और प्रकृति-प्रेमी थे। शहर की चकाचौंध, दूषित, माहौल से दूर, उन्हें नदी और खेतों के बीच, शांत बिल्कुल शांत वातावरण में रहना अधिक प्रिय था।

1866 तथा 67 में सैलून जूरी के सदस्य के रूप में दोबिन्यी युवाओं को आगे लाने हेतु सक्रिय भूमिका में रहें। कुछ समय तक इंग्लैंड के दौरे पर रहे दोबिन्यी 1870 में वहाँ चल रहे एक युद्ध के कारण वापस लौट आये। कैमिल कोरो से मित्रवत व्यवहार के साथ ही कलाशिक्षा की बात भी सामने आती है।

इनके कृतियों में चमकदार रोशनी से नहाई सुबह है और उसी सुबह में रंगों से भीगे नदी में नहाते बत्तख हैं, दोपहर की तपिश है, अलसाई अवस्था में शाम है, फैलता, छितराता आसमान है जो अपने में समेट लेना चाहता है पूरा सूर्य। सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच का बदलता सुनहरा रंग है जहाँ चमक और सुप्त का अंतर स्पष्ट है, जहाँ प्रकृति को महसूसते हुए अंकित करने का प्रयास है, जहाँ प्रकृति के हर रंग को देखा जा सकता है, महसूस किया जा सकता है। द फार्म, कैनवास पर तैल, स्टूडियो आन द बोट, एचिंग, पुल विथ डीयर, एचिंग जैसी कृतियों के कलाकार, प्रकृति के संवेदनशील कलाकार दोबिन्यी 21 फरवरी 1878 को सदा के लिए इस देह को त्याग चले।

वेब सीरिज समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।

भूमि पेडनेकर ने 'दलदल' की में किया कमाल

विश धमीजा की मशहूर किताब -' भेंडी बाजार' से अनुप्रेरित वेबसिरीज -'दलदल' यूँ तो एक क्राईम थ्रिलर है मगर अपराध अन्वेषण करती पुलिस अधिकारी इस सिरीज़ में दो अलग-अलग स्तर पर संघर्षरत दिखाई गई है।एक ओर अपराधी को पकड़ने का संघर्ष है तो दूसरी ओर उसका अपने अतीत का भी मन ही मन चल रहा संघर्ष भी है 'भेंडी बाज़ार ' मुम्बई का वह इलाका है जहाँ सँकरी गलियों में लबालब अपराध मौजूद है । शहर के इसी इलाके में एक सीरियल किलर घूम रहा है जो मर्दों को अपना निशाना बना रहा है । पुलिस परेशान है, पब्लिक हैरान है और इसी बीच एक चरित्र विकसित होता है डिप्टी सुपरिटेंडेंट पुलिस, रीता फरेरा का । सिरीज की इस केन्द्रीय भूमिका को निभाया है प्रतिभाशाली अभिनेत्री भूमि पेंडनकर ने। और जैसा कि हमने पहले कहा था कि पटकथा के मुताबिक रीता सिर्फ मुजरिमों से ही नहीं लड़ रही, वो लड़ रही है अपने उस अतीत से भी जो उसे चैन से सोने नहीं दे रहा है । यही संघर्ष की दुविधा दर्शकों में उत्सुकता जगाती है ।

अस्त-व्यस्त पटकथा और कहन की कमज़ोरी से यह एक एक ऐसी सीरीज बनं गई है जो एपीसोड दर एपीसोड अपने ही बनाए दलदल में धँस जाती है। इसका ट्रेलर देखकर जहाँ यह महसूस हुआ था कि इसमें जबरदस्त रहस्य होगा , वहीं इसमें भावनाओं का तड़का ही कुछ ज्यादा दिखता है । सिरीज की कहानी तीन हिस्सों में बँटी है । पहले हिस्से में बाल तस्करी पर है, दूसरे हिस्से में सीरियल किलिंग की तथाकथा है और अंतिम और तीसरे हिस्से में ट्रॉमा से गुजर रहे लोगों की कहानी बयाँ की गई है । दर्शक इसी हिस्सों में बँटी कहानी में तारतम्यता तलाशते रहते हैं और सिरीज़ थम जाती है। सिरीज की रफ्तार थोड़ी धीमी है , लेकिन ये इसकी कमजोरी नहीं, ताकत है ।यह सिरीज़ आपको वर्णित चरित्रों के साथ तादात्म्य बैठाने का और उनकी तकलीफ को महसूस करने का पूरा वक्त देती है । सात एपिसोड की इस पूरी सिरीज़ में कई कहानियों का ऐसा 'दलदल' है जिसमें से आपको कोई भी कहानी पूरी तरह समझ में नहीं आती है उल्टा एक समय बाद आप खीझ जाते हैं ।

किसी भी सिरीज़ की कमजोर कहानी का खामियाजा उसमें काम करने वाले कलाकारों को भुगतना पड़ता है मगर कलाकार में दम हो तो वो अपने तईं काफी कुछ ठीक-ठाक कर देते हैं । इस सिरीज़ में भी रीटा की केन्द्रीय भूमिका में भूमि पेडनेकर ने यही कमाल दिखाया है । सिरीज में भूमि का किरदार चुप रहने वाला है। उसके अन्दर एक दर्द है और भूमि ने इसे बड़े ही अच्छे से निभाया। उनका ऐसा चरित्र निभाने के लिए हामी भर देना ही बड़ी बात है। हालांकि, एक समय के बाद लगता है कि वो पूरी सिरीज में एक जैसी ही दिख रही हैं और यह उनकी मजबूरी थी क्योंकि उनका चरित्र लिखा ही वैसा गया था। दीपक तिजोरी की बेटी समारा , कुछ सीन में बेहतर हैं पर बाकी जगह ओवरड्रामेटिक हैं। परेश रावल के बेटे आदित्य रावल पूरी सिरीज में नशे में ही रहते हैं। उन्हें देखकर हमें भी कुछ फील ही नहीं होता।

चिन्मय का चरित्र इस सिरीज में आपको चिढ़ाने के लिए हैं और यह काम वो बखूबी करते हैं। भूमि की साथी इन्दू महात्रे के रूप में गीता अग्रवाल का काम बढ़िया है। बाकी कलाकारों में अनंत महादेवन, राहुल भट्ट, सौरभ गोयल और विजय कृष्णा कुछ कुछ देर के लिए हैं और काम सबका ठीक ही है।

सिरीज के निर्देशक अमृतराज गुप्ता ने कहानी को बड़ी ईमानदारी से फिल्माया है. यहाँ रहस्य केवल यह नहीं सुलझाया है कि है कि -'कातिल कौन है ' बल्कि यह भी बताया है कि कोई कातिल क्यों बना ?'अमृत राज गुप्ता ने सुरेश त्रिवेणी के साथ मिलकर एक ऐसी दुनिया रची है जो यथार्थ के काफी करीब की लगती है । फिल्म का लेखन पक्ष श्रीकान्त , अग्निश्वरन, रोहन डिसूजा और प्रिया सग्गी के जिम्मे था जिसका ठीक-ठीक निर्वाह हुआ है । संवाद में हुसैन हैदरी की विशेषज्ञता साफ दिखती है, क्योंकि बातें कम हैं, लेकिन जो हैं, वो सीधा दिल पर लगती हैं । सिरीज के छायांकन की भी तारीफ करनी होगी । मुम्बई को अक्सर पर्दे पर बहुत 'ग्लैमरस' दिखाया जाता है, लेकिन यहाँ मुम्बई एक चरित्र की तरह है, थकी हुई, बोझिल और रहस्यों से भरी. कैमरा एंगल्स ऐसे रखे गए हैं कि दर्शक को हर पल एक किस्म की बेचैनी महसूस होती रहे, जो एक साइकोलॉजिकल थ्रिलर की कामयाबी की निशानी है ।

मातृभाषा

डॉ. ललित कुमार

लेखक इन्वर्टिस विश्वविद्यालय बरेली में पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष हैं।

मातृभाषा की ताकत को विश्व भारती शांतिनिकेतन में समझा

मेरठ शहर से बाहर जब मैं उच्च शिक्षा के लिए मध्यप्रदेश (भोपाल), महाराष्ट्र (वर्धा), सिलचर (असम) और पश्चिमी बंगाल (बोलपुर, शांतिनिकेतन) पढाई करने गया। तो वहां की मातृभाषाओं से सीधा सामना हुआ। एक बार को तो ऐसा लगता था कि मैं कैसे अपने आप को संभाल पाउँगा। भारत जैसा विशाल देश कैसे अपने आपमें इतनी विविधताएं समेटे हुए कि महाराष्ट्र असम और बंगाल के साथ अन्य राज्यों में हिंदी को सिर्फ संचार का एक बेहतर माध्यम माना जाता है। लेकिन जब भी कोई व्यक्ति आपस में संवाद करता है, तो उनकी मातृभाषा उन्हें एक दूसरे करीब ला देती है। ऐसा मैं इसलिए बता रहा हूं कि मैंने खुद कई बार ऐसी घटनाओं का सामना किया है। खासकर बंगाल में मातृभाषा के प्रति जो प्यार और इज्जत देखने को मिलती है वैसी बहुत ही कम जगह देखने को मिलती है।

मातृभाषा की ताकत का एहसास मुझे तब समझ में आया, जब मैं विश्व भारती शांतिनिकेतन में पीएचडी करने के लिए गया था। मैं दिल्ली एनसीआर मेरठ शहर में जहां पला पढ़ा। वहां की खड़ी बोली में हरियाणवी और पंजाबी भाषा का मिक्स संवाद देखने को मिलता है। वह संवाद ऐसा तीखा होता है, जो किसी भी बाहरी व्यक्ति को बुरा लग सकता है, क्योंकि वेस्ट यूपी के मेरठ, मुजफ्फरनगर, बागपत, शामली और सहारनपुर के इन जिलों में ज्यादातर हरियाणवी और पंजाबी भाषा का मिक्स संवाद यानी एक मिला-जुला असर देखा जाता है। मातृभाषा का फैला यह मकड़ जाल हमारे दिलों दिमाग पर इस कदर हावी है कि हम चाह कर अगर किसी भी बोली को अपना ले, लेकिन मातृभाषा का आकर्षण हमें कहीं न कहीं ज़रूर प्रभावित करता है, जो हमें अपनेपन का एहसास कराकर एक दूसरे के करीब लाता है।

मेरठ शहर से बाहर जब मैं उच्च शिक्षा के लिए मध्यप्रदेश (भोपाल), महाराष्ट्र (वर्धा), सिलचर (असम) और पश्चिमी बंगाल (बोलपुर, शांतिनिकेतन) पढाई करने गया। तो वहां की मातृभाषाओं से सीधा सामना हुआ। एक बार को तो ऐसा लगता था कि मैं कैसे अपने आप को संभाल पाउँगा। भारत जैसा विशाल देश कैसे अपने आपमें इतनी विविधताएं समेटे हुए कि महाराष्ट्र असम और बंगाल के साथ अन्य राज्यों में हिंदी को सिर्फ संचार का एक बेहतर माध्यम माना जाता है। लेकिन जब भी कोई व्यक्ति आपस में संवाद करता है, तो उनकी मातृभाषा उन्हें एक दूसरे करीब ला देती है। ऐसा मैं इसलिए बता रहा हूं कि मैंने खुद कई बार ऐसी घटनाओं का सामना किया है। खासकर बंगाल में मातृभाषा के प्रति जो प्यार और इज्जत देखने को मिलती है वैसी बहुत ही कम जगह देखने को मिलती है।

विश्व भारती शान्तिनिकेतन में जब भी मैं अपने किसी प्रशासन काम के लिए जाता था। वहां आड़े मातृभाषा आ जाती थी। एक बार का वाक्य मुझे याद है, जब मैं पीएचडी की वार्षिक फीस जमा कर रहा था। वहां बैठा कर्मचारी मुझसे बंगला में और मैं हिंदी में यानी हम दोनों अपनी मातृभाषा में एक दूसरे से लगातार संवाद करते रहे। यानी दोनों के संवाद हिंदी और बंगाल भाषा में होते रहे। अंत में कर्मचारी बोला आमी हिंदी जानी न, अपनार बांग्ला ते बोलो, मैंने कहा मुझे बांग्ला नहीं आती। उसने फिर कहा तुमि के बोलेछे आमी जानी न, यानी मुझे नही पता आप क्या बोल रहे है। तब मुझे समझ में आ गया कि मातृभाषा व्यक्ति की समाजिक-संस्कृति की एक ऐसी धरोहर है, जिससे उसकी पहचान होती है।

विश्व भारती शांतिनिकेतन देश का एक पहला ऐसा केंद्रीय विश्वविद्यालय है, जहां करीब 21 भाषाओं के विभाग खुले हैं और देश दुनिया की अलग-अलग भाषाओं में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और पीएचडी डिग्री जैसे कोर्स चलते हैं। देश के किसी संस्थान में इतनी भाषाओं में पढ़ाई नहीं होती। कारण विश्व भारती शांतिनिकेतन अपने आपमें मातृभाषा के उद्देश्य को संरक्षण और बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भाषा की विविधता के प्रति जागरूकता फैलाना में काम कर रहा है।

मातृभाषा की नींव ही बांग्लादेश (पूर्व पाकिस्तान) भाषा आंदोलन से जुड़ी है। वर्ष 1992 में 21 फरवरी को बांग्ला भाषा को आधिकारिक मान्यता दिलाने के लिए छात्रों ने संघर्ष कर रहे थे। और बाद में पुलिस ने उन पर गोली चला दी। जिसमें कई छात्रों की मृत्यु हो गई। छात्रों के शहादत की याद में 21 फरवरी को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया गया। वहीं यूनेस्को ने 1999 में 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मान्यता दी, और वर्ष 2000 में पहली बार इसे वैश्विक स्तर पर मनाया गया।

दुनिया में लगभग 8,324 भाषाएं बोली जाती हैं। जिनमें से 7000 भाषण प्रचलन में है। इनमें बहुत सी भाषाएं खत्म होने के कगार पर पहुंच चुकी है। यानी भाषाओं के संरक्षण की दिशा में देश ही नहीं दुनिया के कई देश इस पर काम कर रहे हैं। भाषा हमारी पहचान, संचार और जरिए समाज को एक सूत्र में पिरोने, शिक्षा और विकास के लिए जरूरी हो जाती है। भाषा केवल रोजगार तक की सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह समावेशी विकास में एक अहम भूमिका अदा करती है। वैश्वीकरण की प्रतिस्पर्धा में मातृभाषा पर मंडराता खतरा आने वाली पीढ़ी को मुसीबत में डाल सकता है, क्योंकि नई पीढ़ियां को जैसे सिखाया और बताया जाएगा। वह इस पर चलकर उसको आत्मसात करेंगे। इसलिए अपनी मातृभाषा का संरक्षण करके नई पीढ़ियों में ऐसे संस्कार डाले जाए, ताकि वह उन्हें संभालकर रख सके। हमें यह भी याद रखना होगा कि जब भी भाषाओं की चमक फीकी पड़ेगी, तो दुनिया की सांस्कृतिक विविधता भी खतरे में पढ़ सकती है। दुनिया में कम से कम सात हजार भाषाओं में 45 फ़ीसदी भाषाएं लुप्तप्राय है। यानी अकेले भारत में लगभग 19,500 से अधिक भाषा या बोलियां बोली जाती है, लेकिन इनमें से केवल 100 भाषाओं का इस्तेमाल शिक्षा के क्षेत्र में होता है।

यूनेस्को की एक रिपोर्ट यह भी बताती है कि 21वीं सदी में लगभग 3000 भाषाएं विलुप्त हो जाएंगी। एक अनुमान यह भी लगाया जा रहा है कि 22वीं सदी तक मात्र सौ भाषाएं ही शेष रह जाएंगे। दुनिया में जिस गति से भाषाएं विलुप्त हो रही है, आने वाले भविष्य में उनके अस्तित्व भी समाप्त हो सकता है, लेकिन जो भाषा खतरे में आ रही है। उनके साथ उनकी संस्कृति भी समाप्त हो जाएगी । अकेले मैक्सिको में 68 भाषाओं में से 64 भाषाएं विलुप्त होने के कगार पर हैं। पेरू में लगभग 50 भाषाओं पर गंभीर खतरा बढ़ता जा रहा है। अफ्रीका की 350 से ज्यादा भाषाओं पर भी खतरा मंडरा रहा है। ऑस्ट्रेलिया में 100 से ज्यादा भाषाएं शामिल है, जिन पर भी खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। वहीं तुर्की, ईरान और इराक में बोली जाने वाली कुर्द भाषा को लुप्तप्राय माना जा रहा है। कुर्द भाषा एकमात्र ऐसी भाषा है, जिसे दो करोड़ से ज्यादा लोग बोलते हैं। लेकिन कहीं भी इसे आधिकारिक भाषा का दर्जा नहीं मिला है। शिक्षा के क्षेत्र में इसका असर न के बराबर है। यूरोप में 200 भाषाओं में से कई भाषाएं लुप्तप्राय है। इनमें वेल्श, ब्रेटन और आइरिश जैसी सेल्टिक भाषाएं शामिल है, हालांकि आयरिश (गैलिक) आयरलैंड में इंग्लिश के साथ बोली जाती है।

भाषाई विविधता और बहुभाषावाद के लाभों को नियमित रूप से उजागर करना बेहद जरूरी है। दैनिक जीवन में हम जितनी अधिक भाषाएँ सीखते, जानते और समझते हैं। हमारे ज्ञान का कौशल उतना ही बेहतर होता है, जो हमें कही भी जीवन में सहायता प्रदान करने में मदद करता हैं, और हम सांस्कृतिक रूप से विश्व के अन्य क्षेत्रों में उतने ही करीब जाते हैं। इसीलिए विश्व भर में भाषाई समुदायों का समर्थन करना और एक-दूसरे के ज्ञान को साझा करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

रक्तदाताओं का सम्मान करना गर्व की बात-खंडेलवाल

रक्त सेवा शौर्य सम्मान समारोह में रक्तदान समितियों का हुआ सम्मान

बैतूल। यह बोलने का नहीं बल्कि सम्मान करने का दिन है। कई प्रकार के दान होते हैं इनमें सबसे बड़ा दान रक्तदान होता है। क्योंकि रक्तदान सीधे किसी व्यक्ति के जीवन को बचाने से होता है आज हमें गर्व है कि ऐसे सेवा भाव से प्रेरित रक्तदाताओं का सम्मान करने का अवसर मिला है। ये वो लोग हैं जो बिना किसी स्वार्थ के केवल मानवता के नाते आगे आकर अपना रक्तदान करते हैं और किसी अंजान व्यक्ति के जीवन की डोर को मजबूत करते हैं। उक्त आशय के विचार आज जिला अस्पताल परिसर में शासकीय रक्तकोष बैतूल,स्वास्थ्य विभाग बैतूल के द्वारा आयोजित रक्त सेवा शौर्य सम्मान समारोह एवं रक्तदाता प्रेरणा प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने व्यक्त किए।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इसके पश्चात केंद्रीय राज्यमंत्री डीडी उइके ने अपने संबोधन में कहा कि आज हमें उन लोगों का सम्मान करने का अवसर मिला है जो दूसरों के प्राणों की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहते है। यह एक कार्यक्रम नहीं बल्कि मानवता के प्रति समर्पण का उत्सव है। रक्तदान वास्तव में एक जीवनदान महायज्ञ है। एसबीटीसी डिप्टी डायरेक्टर एनएचएम डॉ.रूबी खान ने अपने संबोधन में कहा कि पूरे प्रदेश में रक्तदाता मरीजों की जान बचा रहे है। आपके कार्य की जितनी सराहना की जाए कम है।बैतूल में रक्तदाता बड़े उत्साह के साथ रक्तदान करते है,यही कारण की यहां लगातार रक्तदाताओं की संख्या बढ़ती जा रही है। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर सीएमएचओ डॉ. मनोज हुरमाड़े ने स्वागत उद्बोधन में सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रक्त कोष अधिकारी डॉ. अंकिता सीते ने अपने उद्बोधन में बताया कि जिन समितियों का आज यहां सम्मान हो रहा है उनके द्वारा एक साल में लगभग 90 रक्तदान शिविर आयोजित कराए गए हैं। इनके द्वारा किए गए रक्तदान के कारण ही सिकल सेल और थैलेसीमिया के मरीजों को बिना रिप्लेसमेंट के रक्त उपलब्ध कराया जाता है। उन्होंने बताया कि 90 रक्तदान शिविर में 7239 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया है ।जिले में 890 सिकल सेल रोगियों को रक्त दिया गया है।455 थैलेसीमिया मरीज और 985 गर्भवती माताओं को निःशुल्क रिप्लेसमेंट फ्री बल्ड उपलब्ध कराया गया।

प्रकृति वात्सल्य गौशाला की चरनोई भूमि पर उद्योग विभाग ने की तार फैंसिंग, गौसेवकों में आक्रोश

विश्व हिन्दू परिषद गौसेवा क्षेत्र प्रमुख सोहन विश्वकर्मा ने उद्योग विभाग को दी चेतावनी

धार। धार शहर और जिले में बीमार, बेसहारा गौवंश और बेजुबान प्राणियों के लिए प्रकृति वात्सल्य गौशाला, 34 वी बटालियन धार संवेदनशीलता के साथ कार्य कर रही हैं। करीब 300 गौवंश से परिपूर्ण यह गौशाला आज धार जिले में ही नहीं वरन् प्रदेशभर में अपनी पहचान रखती हैं। प्रकृति वात्सल्य गौशाला की चरनोई भूमि पर उद्योग विभाग ने अतिक्रमण कर तार फैंसिंग कर देने से गौसेवकों में खासा आक्रोश व्याप्त हो गया हैं। विश्व हिन्दू परिषद गौसेवा क्षेत्र प्रमुख सोहन विश्वकर्मा ने उद्योग विभाग , धार जिला प्रशासन को चेतावनी देते हुए कहा कि जल्द ही उद्योग विभाग धार तार फैंसिंग कर अतिक्रमण की गई जमीन प्रकृति वात्सल्य गौशाला को वापस दे नहीं तो वह स्वयं और विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ता कलेक्टर कार्यालय में धरने पर बैठ जाएंगे।

उद्योग विभाग ने रखा सब को अंधेरे में- प्रकृति वात्सल्य गौशाला, धार की गौवंश की चरनोई भूमि पर उद्योग विभाग ने सब को अंधेरे में रखा। उक्त भूमि पशुपालन विभाग की हैं विभाग से भी किसी भी तरह की अनापत्ति उद्योग विभाग ने नहीं ली है।

ग्राम पंचायत जेतपुरा से उद्योग विभाग ने विकास के परमिशन नही ली और ना ही प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से कोई एनओसी नही ली हैं। ऐसे में यह मामला गर्मा गया हैं। उक्त चरनोई भूमि टीएनसी में इसका भूमि उपयोग उद्योग के लिए नहीं हैं। यह भूमि पब्लिक सर्विस के लिए हैं।

उद्योग लगने के लिए जो भी अनापत्ति लगती हैं उसका पालन नहीं किया गया- उद्योग विभाग धार द्वारा किसी क्षेत्र में उद्योग लगने के लिए जो भी अनापत्ति लगती हैं उसका पालन नहीं किया गया इससे गौसेवकों में आक्रोश व्याप्त है। किसी भी भूमि का सीमांकन किया जाता है तो आसपास के भूधारको को सूचना पत्र दिया जाता है वह भी नहीं दिया गया। प्रकृति वात्सल्य गौशाला, धार को भी सूचित नही किया गया

इससे यह मामला गर्मा गया है

गौ सेवा के लिए संवेदनशील सीएम को भी इस मामले से या तो अवगत नही कराया या फिर गुमराह किया गया

गौरतलब है कि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव गौसेवा और गौसंरक्षण के लिए बेहद संवेदनशील हैं प्रश्न उठ रहे हैं कि उन्हे भी इस मामले से या तो अवगत नही कराया गया या फिर गुमराह किया गया हैं।

गौमाता की भूमि पर उद्योग विभाग को अतिक्रमण नहीं करने देंगे मुख्यमंत्री जी से चर्चा कर रुकवाएंगे-

विश्व हिन्दू परिषद गौसेवा क्षेत्र प्रमुख , सोहन विश्वकर्मा

÷ प्रकृति वात्सल्य गौशाला में बीमार पशुओं को रखा जाता है लगभग 300 गाय माता रहती हैं। उक्त भूमि पशुपालन विभाग की हैं विभाग से भी किसी भी तरह की अनापत्ति उद्योग विभाग ने नहीं ली है। गौशाला की चरनोई भूमि पर अतिक्रमण होता है तो गौवंश की दुर्दशा हो जाएगी। ÷

धर्मेन्द्र जोशी, अध्यक्ष प्रकृति वात्सल्य गोशाला, धार

ट्रिपल मर्डर केस: आरोपी को बेहोश करके 11 पुलिसकर्मी ले गये ग्वालियर

अब ग्वालियर के मानसिक रोगियों की विशेष जेल (आरोग्य केंद्र) में होगा इलाज

संजय द्विवेदी, बैतूल। जिले के सावंगा गांव में अपने माता-पिता और भाई की हत्या करने वाला आरोपी दीपक धुर्वे का इलाज अब ग्वालियर के मानसिक रोगियों की विशेष जेल (मानसिक रोग आरोग्य केंद्र) में होगा। 11 पुलिसकर्मियों की टीम शनिवार को उसे लेकर रवाना हुई। जहां मानसिक रोगी कैदियों के उपचार और निगरानी की व्यवस्था है। आरोपी का स्वभाव अत्यधिक आक्रामक होने के कारण उसे नींद की दवा दी गई थी। अर्ध बेहोशी की हालत में ही उसे ग्वालियर के लिए रवाना किया गया। पुलिस पिछले दो दिनों से उसे ले जाने की प्रक्रिया में जुटी थी। उल्लेखनीय है कि सांवगा गांव के दीपक धुर्वे ने गत 19 फरवरी को पिता राजू उर्फ हंसू धुर्वे (45), मां कमलती (40) और भाई दिलीप (23) की हत्या कर दी थी। इसके बाद वह दरवाजा बंद कर लाशों के पास ही बैठा रहा। कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची तो लाशें पड़ी हुई थी और फर्श और दीवारों पर खून के धब्बे बिखरे हुए थे। वहीं 5 वर्षीय भांजे प्रशांत परते की हालत गंभीर होने पर उसे अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। दरअसल जब 19 फरवरी की सुबह धुर्वे परिवार का दरवाजा देर तक नहीं खुला, तो पड़ोसी द्वारा कई बार आवाज देने के बाद भी अंदर से कोई जवाब नहीं मिला। तब गांववालों ने पुलिस को सूचना दे दी। पुलिस और फोरेंसिक टीम दरवाजा तोड?र अंदर पहुंची तो देखकर रोंगटे खड़े हो गए। वँहा तीन लाशें पड़ी थीं। सभी पर जोरदार वार किया गया था। एक टूटी लकड़ी और सरिया पडा था। कमरे के एक कोने में दीपक चुपचाप छुप कर बैठा था।

पांच साल का भांजा छिपा मिला- इस घटना के दौरान घर में उसका पांच साल का भांजा भी था, जो घर के कोने में छिपा हुआ था। बताया जा रहा है कि भांजे ने भयभीत होकर खुद को एक कपड़े से ढंक लिया था। उसने इस पूरे हत्याकांड को अपनी आंखों से देखा है। दीपक ने घर की एक बिल्ली को भी मार डाला था। बताया जा रहा है कि घर में रात को बनाए गए खाने के बर्तन बिखरे हुए थे, जिससे अनुमान लगाया गया कि वारदात खाने से पहले की गई थी। पुलिस और फोरेंसिक टीम ने जो सीन ऑफ क्राइम पाया, उससे लगता है कि दीपक ने पहले छोटे भाई दिलीप से विवाद या झगड़ा शुरू किया। पिता जब बेटे को बचाने के लिए आगे बढ़े, तो उन्होंने शायद दिलीप के ऊपर खुद को ढाल लिया, क्योंकि दोनों के शव एक-दूसरे से लिपटे हुए मिले। मां कमलती ने जब यह देखा, तो वह बीच में आईं, लेकिन दीपक ने उन पर भी हमला कर दिया होगा।

मानसिक रोगी बताया जा रहा आरोपी- दीपक के जीजा सुखचंद धुर्वे बताते है उसे दो साल से मानसिक परेशानी चल रही थी। एक साल से दौरे बहुत बढ़ गए थे। कभी-कभी वह जोर से चिल्लाता था। परिवार ने पहले जाम सांवरी के हनुमान मंदिर में भगत से इलाज कराया। वहां डायरेक्ट अर्जी लगाकर झाड़-फूंक की, फिर परिवार ने नागपुर के डॉक्टर को भी दिखाया। कुछ दिन पहले ही दीपक नागपुर से लौटकर आया था। जीजा बताते हैं जब भी उसे दौरा पड़ता था, शरीर कांपता था, मुंह से अजीब आवाजें निकालता था, फिर एक घंटे में शांत हो जाता था, लेकिन उसके बाद किसी से उल्टा-सीधा नहीं बोलता था। बताया जाता है कि आरोपी दीपक धुर्वे पढ़ाई में भी काफी होशियार था। उसने 12वीं कक्षा में टॉप किया था।

मानसिक रोगी आरोपी ने थाने में भी की मारपीट, स्वीकार की वारदात पर कारण नहीं बताया - कोतवाली टीआई देवकरण डेहरिया ने बताया कि दीपक को हिरासत में लेने के बाद भी वह बेहद एग्रेसिव रहा। पूछताछ में उसने वारदात तो स्वीकार की, लेकिन कारण नहीं बताया। रात को थाने में भी उसने एक बंदी से मारपीट की और पुलिसकर्मियों पर भी हमले का प्रयास किया, जिसके बाद उसे जिला अस्पताल भेजा गया। जहां उसे हाथ पैर बांधकर रखा गया और अस्पताल के वार्ड के बाहर चार पुलिसकर्मी तैनात किए गए। टीआई देवकरण ने बताया कि वारदात के समय उपस्थित मासूम भांजे के अनुसार आरोपी अपने छोटे भाई से मारपीट कर रहा था तब दिलीप का पिता बचाने आया। तब उसने उन्हें भी मारा। आरोपी का स्वभाव अत्यधिक आक्रामक होने के कारण उसे नींद की दवा दी गई थी और बेहोशी की हालत में ही ग्वालियर के लिए रवाना किया गया। मनोचिकित्सक डॉ. संजय खातरकर ने बताया, ऐसे मरीजों में शक, भ्रम, डर और आवाजें सुनाई देने जैसे लक्षण होते हैं। कई बार वे हिंसक हो जाते हैं। कई बार वे खुद को नुकसान पहुंचाते हैं। यह पूरी तरह मानसिक बीमारी का असर है।

आरोपी इतना आक्रामक कि 11 पुलिसकर्मी उसे लेकर गए ग्वालियर- आरोपी को 11 पुलिसकर्मी लेकर ग्वालियर के लिए रवाना हुए। इससे पहले आरोपी को नींद की दवा दी गई। बताया जा रहा है कि सीजेएम कोर्ट ने आरोपी दीपक का जेल वारंट जारी किया था। हालांकि, बैतूल जेल प्रशासन ने मानसिक रोगी कैदियों को रखने की समुचित व्यवस्था न होने की जानकारी दी थी। इसके बाद वारंट को ग्वालियर स्थानांतरित करने की अनुशंसा की गई। मेडिकल रिपोर्ट सहित अन्य आवश्यक औपचारिकताएं पूरी करने के बाद पुलिस ने आरोपी को ग्वालियर भेज दिया।

संभागायुक्त, पुलिस महानिरीक्षक पहुंचे थे गांव- घटना के बाद नर्मदापुरम रेंज के पुलिस महानिरीक्षक मिथिलेश कुमार शुक्ला, कमिश्नर केजी तिवारी, कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी और एसपी वीरेंद्र जैन भी गांव पहुंचे। अधिकारियों ने फोरेंसिक टीम से जानकारी लेने के साथ ग्रामीणों से भी बातचीत की थी। वरिष्ठ अधिकारियों ने इस घटना को मानसिक स्वास्थ्य की अनदेखी का गंभीर उदाहरण बताया है। उनका कहना है कि ऐसे मरीजों की समय पर पहचान, उपचार और ग्राम स्तर पर जागरूकता व चिकित्सकीय व्यवस्था बेहद जरूरी है। फिलहाल आरोपी को ग्वालियर जेल स्थित मानसिक आरोग्य केंद्र में चिकित्सकों की निगरानी में रखकर उसकी मानसिक स्थिति की जांच और उपचार की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

धार के उदय रंजन क्लब मैदान पर 'स्वदेशी मेले' का भव्य आगाज, विधायक नीना वर्मा ने किया शुभारंभ

धार। शहर के ऐतिहासिक उदय रंजन क्लब मैदान पर शुक्रवार को 'स्वदेशी मेले' का रंगारंग शुभारंभ हुआ। स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने और आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने के उद्देश्य से आयोजित इस मेले का उद्घाटन मुख्य अतिथि धार विधायक नीना विक्रम वर्मा द्वारा किया गया।

स्वदेशी को अपनाने का आह्वान- उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए विधायक नीना वर्मा ने कहा कि यह मेले का दूसरा सफल वर्ष है, जो क्षेत्र में स्वदेशी वस्तुओं के प्रति बढ़ती जागरूकता को दर्शाता है। उन्होंने मंच से आमजन से अपील की कि वे अधिक से अधिक स्वदेशी उत्पादों को खरीदें और उनका उपयोग करें।विधायक ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'समृद्ध भारत' और 'आत्मनिर्भर भारत' के सपने को साझा करते हुए जोर दिया कि जब हम स्थानीय कलाकारों और व्यापारियों का समर्थन करेंगे, तभी देश आर्थिक रूप से सशक्त बनेगा।

भक्तिमय रहा वातावरण- कार्यक्रम की शुरुआत मां वाग्देवी सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन और आरती के साथ हुई। इस अवसर पर आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार करने के लिए भजन मंडली द्वारा सुंदरकांड का पाठ किया गया, जिसकी मधुर प्रस्तुतियों ने उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर मेला सह संयोजक दीपक बिडकर, मिलन पाल, कालीचरण सोनवानीया, ममता जोशी, आशिष परिहार, विशाल निगम (भाजपा मंडल अध्यक्ष) एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

मेले के मुख्य आकर्षण- मेला न केवल व्यापार का केंद्र है, बल्कि मनोरंजन का भी एक बड़ा संगम बनकर उभरा है। इस वर्ष मेले में विशाल झूले, बच्चों के लिए जलपरी (वाटर एक्टिविटी) खान-पान विभिन्न क्षेत्रों के स्वादिष्ट व्यंजनों के फूड स्टॉल्स, हस्तशिल्प, स्वदेशी निर्मित घरेलू सामान और पारंपरिक दुकानें प्रतिदिन होने वाले विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम लोगों का ध्यान खींच रहे हैं।

डॉ. तृप्ति अग्रवाल एम.एस. की उपाधि से सम्मानित

बैतूल। शहर के प्रसिद्ध बीआर अंबेडकर शिक्षा महाविद्यालय व श्रीराम फार्मेसी कॉलेज जामठी के संचालक इंजीनियर ध्रुवप्रकाश अग्रवाल की सुपुत्री डॉ. तृप्ति अग्रवाल को एमएस (स्त्री रोग विशेषज्ञ) की उपाधि डी. व्हाय विश्वविद्यालय नवी मुम्बई में आयोजित दीक्षांत समारोह में कुलाधिपति द्वारा प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस उपलब्धि का श्रेय डॉ. तृप्ति अग्रवाल ने अपने दादाजी शिक्षाविद स्व. डॉ मंगल प्रसाद अग्रवाल को दिया है। डॉ. तृप्ति का कहना है कि उनके कुशल मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से ही उन्होंने सफलता प्राप्त की। साथ ही माता-पिता और पुरे परिवार को इस सफलता का श्रेय जाता है। डॉ. तृप्ति अग्रवाल ने कहा कि चिकित्सक बनकर लोगों की सेवा करना अपने आप में सौभाग्य की बात है, क्योंकि चिकित्सा के जरिये से पीड़ितों की सेवा का अवसर मिलता है।

रेल रूकेगी तरक्की बढ़ेगी

रेल समस्याओं को लेकर कांग्रेस की विशाल पदयात्रा , प्रदेश कांग्रेस सह प्रभारी होगी शामिल

सोहागपुर। सोहागपुर विधानसभा के माखननगर तहसील के रेल्वे स्टेशन बागरातवा में कोरोना काल से पूर्व कुछ यात्री ट्रेन रुका करती थीं लेकिन आज कोरोना काल को बीते पाँच के बाद रेल प्रशासन ने एक मात्र मेमो गाड़ी को छोड़कर सभी यात्री गाड़ियाँ बन्द कर दी हैं । इसी समस्याओं को लेकर 22 फरवरी को 11 बजे से माखन चौक से जिला कांग्रेस एवं ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में विशाल पदयात्रा निकाली जाएगी। यात्रा शाम 5 बजे बागरातवा पहुंचेगी । पूर्व विधानसभा विधायक प्रत्याशी एवं कांग्रेस नेता पुष्पराज सिंह पटेल ने इस प्रतिनिधि को बताया कि इस पदयात्रा में प्रदेश कांग्रेस सह प्रभारी श्रीमती ऊषा नायडू जी भी शामिल होगी। बागरातवा स्टेशन मास्टर को ज्ञापन भी सौंपा जाएगा। श्री पटेल ने कहा कि रेल प्रशासन 64, पंचायतों एवं करीबन 120 ग्रामों के नागरिकों की अनदेखी, अनसुनी कर रहा हैइस कारण रेल प्रशासन को जगाने के लिए पदयात्रा की जा रही है। इस अवसर पर जिला प्रभारी ओम पटैल, पूर्व विधायक संजय शर्मा, , जिला कांग्रेस अध्यक्ष शिवकांत (गुड्डन) पाण्डेय, जिला किसान कांग्रेस अध्यक्ष विजय बाबू चौधरी आदि भारी संख्या में कार्यकर्ता एवं नागरिक उपस्थित रहेंगे।

शांति समिति बैठक

होली, रंगपंचमी, ईदुलफितर, नवरात्रि, रामनवमी पर्व शांति पूर्ण ढंग से मनाएं

सोहागपुर। नवीन पुलिस थाना परिसर में आगामी त्यौहारों को तहसीलदार आर. एस .झरबड़े, एसडीओ पुलिस संजू चौहान,नगर निरीक्षक उषा मरावी, बीएमओ डॉ रेखा गौर आदि की उपस्थिति में शांति समिति की बैठक संपन्न हुई। इस अवसर पर तहसीलदार आरके झरबड़े, एसडीओ पुलिस संजू चौहान, नगर निरीक्षक उषा मरावी ने आगामी त्यौहारों की जानकारी ली। जिसमें होली दहन 2 मार्च 3 मार्च होली ,8 मार्च रंगपंचमी 19 मार्च से नवरात्र पूर्व,21 मार्च ईदुलफितर एवं 27 मार्च को रामनवमी पर्व होने की जानकारी दी गई। अधिकारियों ने नागरिकों से समस्त त्यौहारों को शांति से मनानें की अपील की गई। पुलिस ने बताया कि होली एवं रंगपंचमी आदि पर पुलिस मुस्तैद रहेगी। इस अवसर पर नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटेल,विजय धुर्वे, पार्षद गण जमील खां एवं गौरव पालीवाल, मुस्लिम त्योहार कमेटी अध्यक्ष वसीम खान यासीन खां राशिद खान,मो अकबर खान ताज मोहम्मद आरिफ खान शेख रहमान ,फिरोज खान ,अबरार हुसैन, अमित परसाई , एएसआई गणेश राय, पूर्व पार्षद जगदीश अहिरवार,आदि उपस्थित थे।

शोभापुर,गुरमखेड़ी, बागरातवा रेल्वे स्टेशनों को चाहिए सुविधाएं, सोहागपुर की आवश्यकता है तत्काल ओवर ब्रिज

सोहागपुर

सोहागपुर विधानसभा के शोभापुर, सोहागपुर,गुरमखेड़ी,बागरातवा रेल्वे स्टेशन देश की आजादी के बाद से अभी तक विकास की राह ताक रहे हैं। कहने को तो इस क्षेत्र ने कांग्रेस एवं भाजपा के नामचीन सांसदों को चुनकर लोकसभा में पहुंचाया है। जिसमें नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के सहयोगी स्वर्गीय हरिविष्णु कामथ, कांग्रेस के स्वर्गीय सैयद मुसा प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू एवं प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री से विशेष संबंध थे। कांग्रेस के केन्द्रीय पेट्रोलियम मंत्री स्वर्गीय नीतिराजसिंह चौधरी, रामेश्वर नीखरा जो स्वर्गीय संजय गांधी के खासे विश्वासपात्र रहे, भाजपा के स्वर्गीय सरताजसिंह, राव उदयप्रतापसिंह एवं वर्तमान में चौधरी दर्शनसिंह को क्षेत्र की जनता ने समय समय पर लोकसभा की देहरी पर चढ़ाया है। लेकिन इस क्षेत्र की जनता-जनार्दन को उन्होंने क्या दिया? सांसद निधि को तो कोई भी निर्वाचित सांसद हो प्रदान कर सकता है।लेकिन काम दिखना चाहिए जनता-जनार्दन को। हम यदि कामथ साहब की बात करें उन्होंने नर्मदापुरम को करेंसी नोट कारखाना देकर ए श्रेणी में खड़ा कर दिया था।

वहीं आपने सोहागपुर के लिए महत्वपूर्ण योजना बनवाई थी कि सोहागपुर के आदिवासी बहुल ग्रामों से छोटी ट्रेन पचमढ़ी तक चले। संयोग से वह योजना अधूरी रह गई। अन्यथा आज सोहागपुर नगरी का कायाकल्प हो चुका होता। इधर क्षेत्रीय सांसदों ने शोभापुर सोहागपुर गुरमखेड़ी बागरातवा रेल्वे स्टेशनों की सुध ही नहीं ली। उक्त स्टेशन अपनी बदहाली एवं स्टापेज के अभाव के कारण क्षेत्र एवं जनता का विकास को अवरूद्ध कर रही है। सोहागपुर रेल्वे स्टेशन का दूसरा प्लेटफार्म काफी नीचा है। छाया का स्थान भी काफी कम है।रेल स्टापेज की भी आवश्यकता है। वहीं सोहागपुर रेल्वे स्टेशन दूसरी तरफ दो वार्ड इन्दिरा एवं तिलक वार्ड यहां आबादी काफी बढ़ चुकी है। वहीं बीसियों आदिवासियों ग्रामीणों को आवागमन के रास्ते पर सम्पार रेल्वे गेट है।जो आधे ,पौन घंटे घंटे बंद रहता है। इस कारण वाहनों एवं नागरिकों छात्र ,छात्राओं की बड़ी भीड़ एकत्रित हो जाती है। यहां ओवर ब्रिज की तत्काल आवश्यकता है। कई संगठनों ने आवाज उठाई। लेकिन राजनेताओं ने केवल समय समय पर सब्जबाग ही दिखाए। लेकिन धरातल पर उतारा नहीं।

ग्राम सेमरीहरचद के पूर्व सैनिक नीमचंद कुशवाहा एवं प्रमोद गुप्ता ने बताया कि गुरमखेड़ी रेलवे स्टेशन पर सुविधाओं का अभाव है। आपने बताया कि सुबह विंध्याचल एक्सप्रेस (बीना एक्सप्रेस) के बाद इटारसी जाने के लिए शाम तक कोई ट्रेन नहीं है वहीं सुबह इटारसी कटनी मेमू ट्रेन के बाद जबलपुर जाने के लिए शाम तक कोई ट्रेन नहीं है।रेलवे समय सारणी में परिवर्तन करके कोरोनाकाल के पहले जैसा किया जा। शटल फास्ट पैसेंजर का दोबारा संचालन के साथ राजकोट एक्सप्रेस के स्टॉपेज की सुविधा मिले। दोनों प्लेटफार्म ऊंचा हो, मारू नदी रेलवे पुल के खंबा नंबर 284 पर अंडर ब्रिज का निर्माण हो, गेट नंबर 230 ग्राम ढोंगरा स्पेशल गेट पर ओवर ब्रिज के लिए प्रस्ताव भेजा जाए। जिससे परसापनी, मढ़ई,सिद्धमहाराज जाने वाले पर्यटकों एवं आदिवासी अंचल के लोगों को आवागमन में सुविधा हो सके। पूर्व सैनिक नीमचंद ने बताया कि सांसद चौधरी दर्शनसिंह को भी हमने ज्ञापन सौंपा था। आपने बड़ी कृषि उपज मंडी के कारण रेट पुआईंट की सुविधा उपलब्ध कराने का मांग भी की है।

आपने अंत में कहा कि मैं विगत 15 सालों से रेल सुविधाओं के लिए प्रयासरत हूं। सांसद से लेकर डीआरएम तक को ज्ञापन सौंप चुका हूं।श्री गुप्ता जी कहते हैं कि गुरमखेड़ी से लगे हुए करीबन 60 ग्रामों के अलावा अभी करीबन नवीन 25ग्राम विस्थापित किए गए हैं। इस कारण रेल्वे की आय भी बढ़ सकती है जब रेल प्रशासन अन्य ट्रेनों का स्टापेज करें।बागरातवा माखन नगर के राकेश नायक ने बताया कि यह क्षेत्र करीबन 120 ग्रामों से घिरा हुआ है। जिसमें आदिवासी ग्राम भी आते हैं। बागरातवा का प्लेटफार्म काफी नीचा है। वहीं

सुबह विंध्याचल एक्सप्रेस (बीना एक्सप्रेस) के बाद इटारसी जाने के लिए शाम तक कोई ट्रेन नहीं है वहीं सुबह इटारसी कटनी मेमू ट्रेन के बाद जबलपुर जाने के लिए शाम तक कोई ट्रेन नहीं है। कोरोना काल में इन्दौर बिलासपुर एक्सप्रेस,जनता मुम्बई एक्सप्रेस आदि ट्रेनों का स्टापेज था। लेकिन वर्तमान समय में क्षेत्र में विकास की काफी संभावनाएं हैं। लेकिन रेल की दृष्टि से ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे क्षेत्र को आजादी ही नहीं मिली है। आखिरकार हमारे लोकप्रिय सांसदगण भारी मतों से विजय प्राप्त करके केवल सांसद निधि बांटकर इतिश्री क्यों कर लेते हैं?।

किंग खान अब दिखाई देंगे 'किंग' में

शाहरुख खान सिद्धार्थ आनंद निर्देशित एक्शन थ्रिलर फिल्म किंग' में एक खूंखार हत्यारे की भूमिका में नजर आएंगे। रेड चिलीज एंटरटेनमेंट और मार्फ्लिक्स पिक्चर्स निर्मित यह फिल्म इस साल क्रिसमस पर रिलीज होगी, जिसमें उनकी बेटी सुहाना खान और दीपिका पादुकोण भी अहम भूमिकाओं में हैं। लंबे अरसे बाद शाहरुख़ खान परदे पर दिखाई देंगे।

शाहरुख खान को उनके फैंस कई नामों से जानते हैं। पर, सबसे ज्यादा जिस नाम से उन्हें पुकारा जाता है वो है 'किंग खान।' उन्हें हिंदी सिनेमा का 'किंग' कहा जाता है। हालांकि तीन दशक के करियर में उन्होंने 'किंग' नाम से कोई फिल्म नहीं की। पर, ये कमी अब जल्द पूरी होने वाली है। बॉलीवुड के किंग अब बड़े परदे पर भी 'किंग' बनकर छाने को तैयार हैं। हाल ही के एक इंटरव्यू में शाहरुख ने 'किंग' शब्द को लेकर बात की। इस दौरान उन्होंने बताया कि उनके लिए इस शब्द का आखिर मतलब क्या है।

उन्होंने एजेंसी को एक ईमेल इंटरव्यू दिया, जिसमें उन्होंने खुद को मिले 'किंग' टैग पर बात की. वो कहते हैं। 'किंग शब्द का मतलब मेरे लिए कभी भी पावर नहीं रहा। ये हमेशा एक जिम्मेदारी की तरह है, उन लोगों के लिए जो आप पर यकीन करते हैं, और उन कहानियों के लिए, जिन्हें आप बताने का फैसला करते हैं।'

शाहरुख ने कहा कि वक़्त गुज़रने के साथ आपको एहसास होता है कि किसी टाइटल से कोई फर्क नहीं पड़ता, बल्कि आप जो करते हैं उससे फर्क पड़ता है। वो कहते हैं कि अपनी जिंदगी और करियर के इस पड़ाव पर, 'किंग' का टाइटल पहचान कम और इस बात की ज्यादा याद दिलाता है कि दिल से, विनम्रता से और उद्देश्य के साथ जीना चाहिए। चाहे वो डिज्नी एडवेंचर फिल्म की कहानी सुनाना हो या फिर मेरी अगली फिल्म का चुनाव करना, मुझे सबसे ज्यादा इस बात से फर्क पड़ता है कि मैं कुछ ऐसा काम करूं, जो लोगों को साथ लाए, उन्हें कुछ महसूस कराए और उन्हें थोड़ी खुशियां दे जाए।

शाहरुख खान के लिए फिल्म 'किंग' कई वजहों से खास है। एक तो इस फिल्म का टाइटल ही खास है, वहीं दूसरा इस फिल्म के जरिए ही उनकी बेटी सुहाना खान बड़े परदे पर कदम रखने जा रही हैं। 'द आर्चीज़' से लाइट कैमरा एक्शन की दुनिया में ओटीटी के जरिए डेब्यू करने वाली सुहाना 'किंग' में अहम रोल में दिखाई देंगी। इस फिल्म में अभिषेक बच्चन, दीपिका पादुकोण भी अहम रोल में होंगे और फिल्म का निर्देशन सिद्धार्थ आनंद कर रहे हैं। शाहरुख पिछली बार बड़े परदे पर 2023 में आई 'जवान' में नजर आए थे। तभी से फैंस शाहरुख की नई फिल्म का इंतजार कर रहे थे, और अब यह खत्म हो गया है। शाहरुख के बर्थडे पर तो 'किंग' का टीजर और एक्टर का फर्स्ट लुक रिलीज किया गया। अब शाहरुख ने फिल्म के नए टीजर के साथ मूवी की रिलीज डेट भी बता दी। 'किंग' के टीजर सी शुरुआत होती है, शाहरुख को बर्फीले पहाड़ों के बीच चोटी पर खड़े होकर चीखते हुए दिखाया जाता है।

वे जख्मी हालत में हैं। और फिर एक शीशे तोड़ते हुए एक बिल्डिंग में कूदते दिखाए जाते हैं। सीने पर गहरे जख्म हैं। शरीर और चेहरा खून से लथपथ है और आंखों में गुस्से की ज्वाला। फिर एक सीन आता है, जिसमें शाहरुख जोर से चिल्लाते हुए किसी को मुक्के से मारते नजर आ रहे हैं। आंखों में खूंखारपन साफ नजर आ रहा है। टीजर के आखिर में शाहरुख की आवाज आती है 'डर नहीं दहशत हूं।'

'राजा शिवाजी' का पहला पोस्टर सामने आया

छत्रपति शिवाजी महाराज जयंती के पावन अवसर पर बहुप्रतीक्षित ऐतिहासिक फिल्म 'राजा शिवाजी' का पहला दमदार पोस्टर जारी किया। फिल्म के निर्देशक और मुख्य अभिनेता रितेश विलासराव देशमुख ने सोशल मीडिया पर यह पोस्टर साझा किया। इसमें वह छत्रपति शिवाजी महाराज के रूप में नजर आ रहे हैं। पोस्टर में महाराज का प्रभावशाली साइड प्रोफाइल दिखाई देता है। हाथ में तलवार, मजबूत कंधे और अडिग नजरें। उनका गंभीर और दृढ़ चेहरा उस तूफान से पहले की शांति को दर्शाता है, जो स्वराज्य की स्थापना और राष्ट्र के गौरव की शुरुआत बना।

'राजा शिवाजी' एक भव्य पैन-इंडिया सिनेमाई प्रस्तुति है, जिसे वैश्विक मंच पर भारतीय संस्कृति के गौरव के रूप में पेश किया जा रहा है। यह एक महत्वाकांक्षी द्विभाषी (मराठी और हिंदी) एक्शन-ड्रामा फिल्म है, जिसमें संगीत दिया है प्रसिद्ध जोड़ी अजय-अतुल ने और सिनेमैटोग्राफी संभाली है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित संतोष सिवन ने. यह फिल्म अपने विशाल पैमाने और शानदार दृश्यात्मक अनुभव के लिए तैयार है। यह फिल्म न केवल एक राजा की कहानी है, बल्कि एक ऐसे बेटे की यात्रा है जिसने एक संकल्प लिया और बड़ी शक्तियों के खिलाफ खड़े होकर स्वराज्य का मार्ग प्रशस्त किया था। यह उस महान योद्धा की गाथा है जिसने झुकने के बजाय संघर्ष चुना और भारत के स्वाभिमान की नींव रखी। 'राजा शिवाजी' 1 मई को सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है। एक बार फिर इतिहास जीवंत होने जा रहा है और एक महान गर्जना पूरे भारत और दुनियाभर में गूंजने को तैयार है!

रियल बॉक्स

युद्ध फिल्मों की सीमा रेखा तोड़ती 'बॉर्डर'

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

'बॉर्डर' फिल्म हिंदी की उन युद्ध कथानक वाली फिल्मों में है, जिसने सिर्फ सीमा पर एक युद्ध ही नहीं दिखाया, बल्कि सैनिकों के दिल की भावनाएं, उनका डर, उनकी उम्मीदें और उनके परिवारों के दर्द को भी बड़े पर्दे पर उतार दिया। 1997 में आई जेपी दत्ता की फिल्म 'बॉर्डर' ने देशभक्ति की भावनाओं को जिस सादगी और गहराई के साथ प्रस्तुत किया, वह आज भी दर्शकों के दिल में बसी है। वहीं 2026 में आई 'बॉर्डर-2' उसी विरासत को आगे बढ़ाने की कोशिश करती है। लेकिन, नए दौर की तकनीक, नए कलाकारों की ऊर्जा और एक बड़े युद्ध-कैनवास के साथ। जब दोनों फिल्मों के कथानक, कलाकारों के अभिनय और निर्देशन को तुलनात्मक रूप से देखा जाए, तो स्पष्ट होता है, कि भारतीय सिनेमा ने युद्ध की कहानियों को कैसे समय के साथ बदला और दर्शकों की अपेक्षाओं भी किस तरह विकसित हुई। पहली फिल्म 'बॉर्डर' की ताकत उसकी सादगी और मानवीय दृष्टिकोण में थी। फिल्म में युद्ध सिर्फ गोलियों और टैंकों की लड़ाई नहीं था, बल्कि हर सैनिक के भीतर चल रही भावनात्मक लड़ाई भी थी। हर किरदार की अपनी कहानी थी। किसी की प्रेम कहानी, किसी की पारिवारिक जिम्मेदारी, किसी का व्यक्तिगत डर और इन सबके बीच देश के लिए खड़े होने का जुनून। यही वजह थी कि दर्शक हर किरदार से भावनात्मक रूप से जुड़ गए थे। तकनीकी सीमाओं के बावजूद फिल्म के युद्ध दृश्य इतने प्रभावी थे, कि वे वास्तविकता का अनुभव का अहसास कराते थे। उस दौर की अभिनय शैली में जो सच्चाई और गंभीरता थी, उसने फिल्म को एक क्लासिक बना दिया।

इसी सीरीज की नई फिल्म 'बॉर्डर-2' की बात करें, तो यह एक अलग समय काल की फिल्म है। इतने लंबे अंतराल में दर्शकों के सोच और उनकी पसंद में काफी अंतर आया। आज के दर्शक बड़ा कैनवास, तेज गति और भव्य दृश्यों की अपेक्षा करते हैं। यही वजह है कि फिल्म उसी तरह से दिशा में आगे बढ़ती है। कथानक को सिर्फ एक मोर्चे तक सीमित रखने के बजाय इसे तीन अलग-अलग सैन्य क्षेत्रों थल सेना, नेवी और वायु सेना तक बढ़ाया गया है। इससे युद्ध का दायरा व्यापक और अधिक प्रभावशाली महसूस होता है। फिल्म कई किरदारों के दृष्टिकोण से आगे बढ़ती है, जो दर्शकों को युद्ध की बहुआयामी तस्वीर दिखाती है। फिल्म का यह विस्तार उसे आधुनिक युद्ध-फिल्मों की श्रेणी में लाता है, लेकिन साथ ही कहानी को भारी और लंबा भी बनाता है। दोनों फिल्मों को निर्देशन के नजरिए से देखें, तो पहली वाली 'बॉर्डर' में भावनाओं का संतुलन सबसे बड़ी ताकत था। निर्देशक ने युद्ध के दृश्यों को भी मानवीय संवेदनाओं से जोड़कर पेश किया था। वहीं 'बॉर्डर-2' का निर्देशन अधिक दृश्यात्मक और बड़े पैमाने पर केंद्रित है। फिल्म धीरे-धीरे किरदारों की पृष्ठभूमि बनाती है और फिर युद्ध की ओर बढ़ती है, जिससे दर्शकों को किरदारों के साथ ज्यादा वक़्त बिताने का मौका मिलता है। हालांकि, कुछ जगहों पर यह धीमापन दर्शकों को लंबा भी लगता है। खासकर तब जब वे तेज रफ्तार वाले एक्शन की उम्मीद लेकर आए हों। तकनीकी रूप से फिल्म आधुनिक है, लेकिन कुछ आलोचनाएं भी सामने आईं कि सभी विजुअल इफेक्ट्स उतने प्रभावशाली नहीं लगे जितनी की उम्मीद की गई थी।

90 के दशक में जब भारतीय सिनेमा में युद्ध-शैली की फिल्मों की संख्या सीमित थी, तब जेपी दत्ता की 'बॉर्डर' ने युद्ध दृश्यों से कहीं आगे जाकर सैनिकों के मानवीय संघर्ष, दोस्ती, साहस और परिवार के दर्द को बड़े कैनवास पर उतारा। फिल्म 1971 के भारत-पाक युद्ध के लोंगेवाला युद्ध और उससे जुड़ी घटनाओं पर केंद्रित थी। असली लोकेशनों, वास्तविक हथियारों और सेना के सहयोग से फिल्म को हर फ्रेम में यथार्थवादी बनाकर पेश किया था। उस समय सीमित तकनीक के बावजूद 'बॉर्डर' के युद्ध दृश्य आज भी उतने ही प्रभावशाली लगते हैं। 'संदेसे आते हैं' जैसे गीत और वीर-देश भक्ति के भाव ने दर्शकों के दिल में इसे अनमोल स्थान दिया। फिल्म ने युद्ध को केवल गोली-बारूद की लड़ाई नहीं माना, बल्कि भावनात्मक संघर्ष का चित्रण किया, जो इसे सिनेमा में विशिष्ट बनाता है। 1997 की 'बॉर्डर' ने भारतीय सिनेमा में यह स्थापित किया कि युद्ध फिल्म केवल युद्ध नहीं होती, यह भावनाओं का युद्ध भी है। इसने सैनिकों की पृष्ठभूमि, उनके पारिवारिक संबंध और भाईचारा को सामने लाया। प्रत्येक किरदार की व्यक्तिगत चुनौतियां और उनके मन की लड़ाइयां भी उतनी ही महत्वपूर्ण दिखी जितनी युद्धभूमि की लड़ाइयां।

युद्ध कथानक वाली ज्यादातर फिल्में सिर्फ एक्शन और दृश्य प्रभावों पर ज़ोर देती हैं। 'बॉर्डर-2' में युद्ध के बीच व्यक्तिगत रिश्तों, आंतरिक संघर्षों और मानवीय पहलुओं को गहराई से दिखाया गया, जो इसे साधारण युद्ध दृश्यों से ऊपर उठाता है। यह फिल्म जमीन, हवा और समुद्र तीनों मोर्चों पर संघर्ष दिखाकर युद्ध को एक बड़ी तस्वीर में बदल देती है। यह अलग और व्यापक दृष्टिकोण देती है, जो साधारण दो-पक्षीय संघर्ष से कहीं आगे है। 'बॉर्डर-2' सिर्फ सैनिकों की वीरता को दिखाने तक सीमित नहीं है; बल्कि उनके परिवारों, सपनों और आशाओं को भी सामने रखता है। इससे दर्शक न केवल एक्शन बल्कि इंसानी रिश्तों को भी महसूस करते हैं। यह फिल्म सिर्फ पुराने सितारों पर निर्भर नहीं है। वरुण धवन, दिलजीत दोसांझ, अहान शेट्टी जैसे नई पीढ़ी के कलाकारों ने अपने किरदारों में आध्यात्मिक और भावनात्मक गहराई लाकर फिल्म को संतुलित किया है। 'बॉर्डर-2' अपनी विरासत को सम्मान देते हुए भारतीय युद्ध-सिनेमा की एक नई दास्तान पेश करती है। यह फिल्म दर्शकों को सिर्फ युद्ध की कहानी नहीं सुनाती, बल्कि पृथ्वी के तीनों आयामों पर देशभक्ति, भाईचारे, आत्म-बलिदान और व्यक्तिगत मानवीय भावनाओं का मिश्रण प्रस्तुत करती है।

अभिनय की बात करें तो 'बॉर्डर-2' की सबसे बड़ी खासियत अनुभवी और नए कलाकारों का मिश्रण है। सनी देओल की उपस्थिति फिल्म में भावनात्मक मजबूती और एक परिचित वीरता का एहसास देती है। उनकी स्क्रीन प्रेजेंस आज भी दर्शकों को वही पुरानी ऊर्जा महसूस कराती है, जो उन्होंने पहले भाग में दिखाई थी। नई पीढ़ी के कलाकारों में वरुण धवन का प्रदर्शन काफी परिपक्व और संतुलित माना गया। उन्होंने अपने किरदार में एक सैनिक की जिम्मेदारी और एक इंसान की संवेदनाओं दोनों को अच्छी तरह निभाया है। दिलजीत दोसांझ ने अपने किरदार में आत्मविश्वास और भावनात्मक गहराई का अनूठा मिश्रण दिया, जिससे उनके दृश्य यादगार बनते हैं। अहान शेट्टी जैसे युवा कलाकारों ने भी अपने अभिनय से यह दिखाने की कोशिश की, कि नई पीढ़ी युद्ध-फिल्मों में अपनी अलग पहचान बना सकती है, हालांकि कुछ दर्शकों को उनके एक्शन दृश्यों में थोड़ी कमी महसूस हुई। जहां तक दर्शकों की प्रतिक्रिया की बात है तो यह मिश्रित लेकिन समीक्षात्मक रही। एक तरफ फिल्म की भव्यता, देशभक्ति का भाव और बड़े स्तर का प्रस्तुतीकरण लोगों को आकर्षित करता है, वहीं कुछ पुराने दर्शकों को लगता है कि मूल 'बॉर्डर' की भावनात्मक सादगी और गहराई को पूरी तरह दोहराना आसान नहीं था। यही किसी भी क्लासिक फिल्म के सीक्वल की सबसे बड़ी चुनौती होती है। यानी विरासत को संभालते हुए नई पीढ़ी के लिए कुछ नया पेश करना। 'बॉर्डर-2' इस संतुलन को बनाने की कोशिश करती है और कई जगह सफल भी रही। खासकर तब जब फिल्म व्यक्तिगत कहानियों और सैनिकों के मानवीय पक्ष पर ध्यान देती है।

अगर इसे अन्य युद्ध फिल्मों से अलग देखने की कोशिश करें तो 'बॉर्डर-सीरीज़' की खासियत यही है, कि यह युद्ध को सिर्फ एक्शन या राष्ट्रवादी भाषणों तक सीमित नहीं करती। यहां सैनिकों के परिवार, उनकी यादें, उनके सपने और उनके डर भी कहानी का हिस्सा बनते हैं। 'बॉर्डर-2' इस परंपरा को बनाए रखने की कोशिश करती है, भले ही उसका पैमाना ज्यादा बड़ा और शैली ज्यादा आधुनिक हो गई। तीन अलग-अलग सैन्य क्षेत्रों को दिखाने से युद्ध की व्यापकता पूरी भव्यता से सामने आती है और दर्शकों को यह एहसास होता है कि युद्ध सिर्फ सीमाओं पर नहीं, बल्कि हर दिशा में चलने वाला एक समग्र संघर्ष होता है। दोनों फ़िल्में देखने वाले दर्शकों को हिंदी युद्ध-सिनेमा का विकास दिखाई देता है। पहली फिल्म भावनात्मक गहराई और यथार्थवादी अभिनय की वजह से अमर बन गई, जबकि दूसरी फिल्म आधुनिक तकनीक, नए कलाकारों और बड़े कैनवास के जरिए उसी विरासत को नए समय में जीवित रखने की कोशिश करती है। हो सकता है कि हर दर्शक को दोनों फिल्मों में समान भावनात्मक जुड़ाव महसूस न हो, लेकिन यह भी सच है कि 'बॉर्डर-2' ने नई पीढ़ी के दर्शकों को युद्ध-कथाओं से जोड़ने का एक नया रास्ता खोला है। यह फिल्म उन लोगों के लिए एक भव्य अनुभव है, जो बड़े पैमाने की युद्ध कहानियाँ पसंद करते हैं। उन लोगों के लिए भी एक दिलचस्प तुलना का अवसर है, जो मूल 'बॉर्डर' की सादगी और भावनात्मक गहराई को याद करते हैं। दोनों फ़िल्में मिलकर साबित करती हैं कि जब युद्ध की कहानियों में इंसानी दिल की धड़कन शामिल होती है, तभी वे लंबे समय तक दर्शकों के मन में ज्यादा समय तक जीवित भी रहती हैं।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

परदे पर फिर दिखाई देगा 'वंदे मातरम' का उद्घोष

अशोक जोशी

इन दिनो वंदेमातरम को लेकर राजनीतिक विवाद छाया हुआ है। फिल्मों में इसे सबसे पहले 'आनंदमठ' के माध्यम से 1952 में परदे पर उतारा गया था। आज जब इसका विवाद गहरा रहा है, तो इसे फिर भव्यता के साथ परदे पर उतारने की कवायद तेज हो

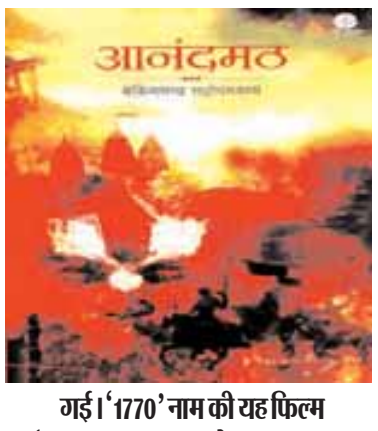

गई। '1770' नाम की यह फिल्म 'आनंदमठ' का नया और भव्य स्वरूप होगी। फिल्म '1770' दरअसल 30 जून 1952 को प्रदर्शित 'आनंदमठ' फिल्म में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने अंग्रेज़ों की चूले हिला देने वाले मशहूर संन्यासी आंदोलन के उन अनाम शहीदों को याद किया गया, जिसके बारे में आज भी शायद देश के लोग ज्यादा नहीं जानते।

आम तौर पर हमारे इतिहास में मई 1857 के विद्रोह को भारत का पहला स्वाधीनता संग्राम कहा गया है। लेकिन, उससे पहले 1770 में हुए इस संन्यासी विद्रोह को अंग्रेज़ इतिहासकार अपनी सुविधानुसार सन्यासियों के भेष में सिर्फ लुटेरों की लूटमार ही बताते रहे, जो सही नहीं है। इस बात को प्रमुखता से फिल्म 'आनंदमठ' के निर्माता हेमेन गुप्ता ने फिल्म में दर्शाया था। इसे 1872 में प्रकाशित बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखित कालजयी कृति 'आनंदमठ' पर बनाया था। भारत को 'वंदे मातरम' का मूल मंत्र देने वाली 'आनंदमठ' संन्यासी आंदोलन पर बनी पहली और शायद आखिरी फिल्म है। लेकिन, अब यह कीर्तिमान शीघ्र ही टूटने जा रहा है।

दक्षिण के ख्यातिनाम निर्देशक अश्विन गंगराजू 'आरआरआर' की सफलता के बाद अब सिनेमा के बड़े परदे पर भव्य रूप में आनंदमठ को प्रस्तुत करने जा रहे हैं। '1770' शीर्षक से बनने वाली यह फिल्म निश्चित ही बहुत भव्य होगी जो भारत के अनाम शहीदों की अनसुनी दास्तान को शिद्दत के साथ पेश करेगी। दर्शकों को इस बात पर आपत्ति थी, कि भारतीय सिनेमा असली नायकों के योगदान और देश के असल इतिहास के अनुसार फिल्में नहीं बनाता। भारत के वास्तविक इतिहास को भी चित्रित नहीं किया जाता। परंतु, अब यह शिकायत कुछ हद तक 'कश्मीर फाइल्स' और 'रौद्रम रणम रूधिरम' ने पूरी कर दी। इन दोनों फिल्मों की भारी सफलता के बाद 'आनंदमठ' उपन्यास का भारतीय कंटेंट एक क्रांतिकारी बदलाव का साक्षी बनने जा रहा है, जिसके सूत्रधार होंगे वी विजयेंद्र प्रसाद। 'आरआरआर' की अपार सफलता से प्रेरित होकर अश्विन गंगराजू ने एक भव्य प्रोजेक्ट बनाने का निर्णय किया। यह प्रोजेक्ट फिल्म और एक वेब सीरीज़ के रूप में परदे पर आएगा।

जहां तक 1952 में प्रदर्शित हेमेन गुप्ता द्वारा निर्देशित 'आनंदमठ' 1952 का सवाल है, तो यह हिंदी की ऐतिहासिक ड्रामा फिल्म है, जो बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के इसी नाम से लिखे गए उपन्यास और 1770 के दौरान बंगाल में हुए संन्यासी विद्रोह की घटनाओं पर आधारित है। बीबीसी वर्ल्ड सर्विस 2003 द्वारा 165 देशों में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित, हेमंत कुमार के संगीत निर्देशन में लता मंगेशकर द्वारा गाए गए गीत वंदे मातरम को अब तक के विश्व के शीर्ष दस गीतों में दूसरा स्थान दिया गया था। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ईस्ट इंडिया कंपनी के पत्र व्यवहार में कई बार फकीरों और संन्यासियों के छापे

का उल्लेख किया गया है। 1770 ईस्वी में पड़े बंगाल में भीषण अकाल के बाद भी अंग्रेज अफसर कर वसूलने पर जोर देते हैं। इसके विरुद्ध सनातन संन्यासियों ने विद्रोह का बिगुल फूंका था। ये संन्यासी धार्मिक भिक्षुक थे, पर मूलतः वे किसान थे, जिनकी जमीन छीन ली गई थी।

इन किसानों की बढ़ती दिक्कतें, बढ़ता भू-राजस्व, 1770 ईस्वी में पड़े अकाल के कारण छोटे-छोटे जमींदार, कर्मचारी, सेवानिवृत्त सैनिक और गांव के गरीब लोग इन संन्यासी दल में शामिल हो गए। यह बंगाल और बिहार में 5 से 7 हजार लोगों का दल बनाकर घूमा करते थे और आक्रमण के लिए ये छापामार यानी गोरिल्ला तकनीक अपनाते थे। आरंभ में यह लोग अमीर व्यक्तियों के अन्न भंडार को लूटा करते थे। बाद में सरकारी पदाधिकारियों को लूटने लगे और सरकारी खजाने को भी नुकसान पहुंचाने लगे, कभी-कभी ये लूटे हुए पैसे को गरीबों में बांट दिया करते थे।

समकालीन सरकारी रिकॉर्ड में इस विद्रोह का उल्लेख इस प्रकार है 'संन्यासी और फकीर के नाम से जाने जाने वाले डकैतों का एक दल है, जो इन इलाकों में अव्यवस्था फैलाए हुए हैं और तीर्थ यात्रियों के रूप में बंगाल के कुछ हिस्सों में भिक्षा और लूटपाट मचाने का काम करते हैं। क्योंकि, यह उन लोगों के लिए आसान काम है। अकाल के बाद इनकी संख्या में अपार वृद्धि हुई। भूखे किसान इनके दल में शामिल हो गए, जिनके पास खेती करने के लिए न बीज था और न साधन।

1772 की ठंड में बंगाल के निचले भूमि की खेती पर इन लोगों ने काफी लूटपाट मचाई थी। 50 से लेकर 1000 तक का दल बनाकर इन लोगों ने लूटने, खसोटने और जलाने का काम किया!

जबकि, यह एक तरह से स्वतंत्रता आंदोलन ही था, जिसे बंगाल के गिरि संप्रदाय के संन्यासियों द्वारा शुरू किया गया था, जिसमें जमींदार, कृषक तथा शिल्पकारों ने भी भाग लिया। इन सभी ने मिलकर ईस्ट इंडिया कंपनी की कोठियों और कोषों पर आक्रमण किए। ये लोग अंग्रेजों से बहुत वीरता से लड़ें। इन विद्रोह के प्रमुख नेताओं में केना सरकार, दिर्जिनारायण, मंजर शाह, देवी चौधरानी, भवानी पाठक उल्लेखनीय हैं। 1880 तक बंगाल और बिहार में अंग्रेजो के साथ संन्यासी और फकीरों का विद्रोह होता रहा। इन विद्रोहों का दमन करने के लिए अंग्रेजों ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी। बांग्ला भाषा के प्रसिद्ध उपन्यासकार बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का सन 1882 में रचित उपन्यास 'आनंदमठ' इसी विद्रोह की घटना पर आधारित है और उन्हीं के बलिदानों को समर्पित था। वह विश्व प्रसिद्ध गीत 'वंदे मातरम' जो आज भी देशवासियों को राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत करने के लिए पर्याप्त है।

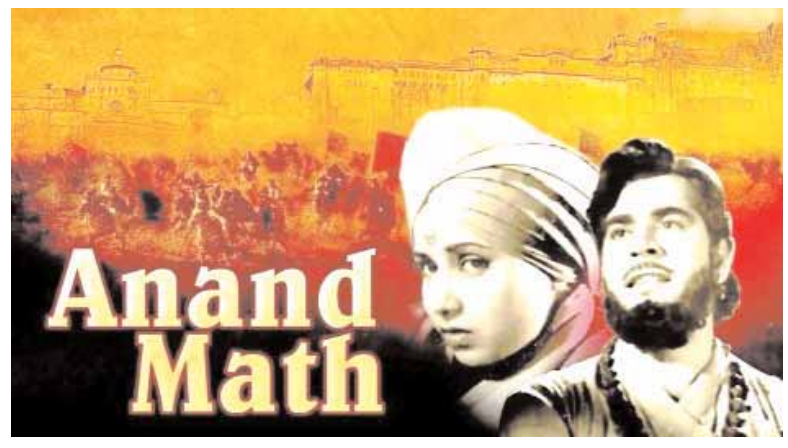

हेमेन गुप्ता की फिल्म 'आनंदमठ' में पृथ्वीराज कपूर, भारत भूषण, गीता बाली, प्रदीप कुमार और अजीत मुख्य भूमिका में हैं। प्रदीप कुमार ने हिंदी सिनेमा में इसी फिल्म से अपनी शुरुआत की थी। संगीतकार हेमंत कुमार की भी यह पहली हिंदी फिल्म थी। इससे कुछ समय ही पहले हेमंत कुमार बंगाली सिनेमा में काम कर चुके थे। लेकिन, हिंदी सिनेमा में करियर शुरू करने के लिए मुंबई चले गए। इस फिल्म के साथ हेमंत कुमार ने एस मुखर्जी के फिल्मिस्तान स्टूडियो के साथ संगीतकार के रूप में नागिन में एक से बढ़कर एक गीत दिए थे।

हिंदी के दर्शकों को टॉलीवुड के नाम से मशहूर तेलुगु फिल्म उद्योग ने बाहुबली के माध्यम से पहली बार भारी संख्या में आकर्षित किया। यह सिलसिला अब सुनामी की तरह बॉलीवुड को अपने आगोश में ले रहा है। 'आरआरआर' के बाद प्रयोग, रचनात्मकता एवं नई कथाओं का अंबार सा लग चुका है और '1770' इस सिलसिले को भव्य रूप से आगे बढ़ाने जा रही है। असल में अश्विन गंगराजू के निर्देशन में '1770' नामक एक बहुभाषीय फिल्म प्रदर्शित होने वाली है, जिसका मोशन पोस्टर हाल ही में प्रदर्शित हुआ। तेलुगु समेत बंगाली, हिन्दी, तमिल, मलयालम समेत अनेक भाषाओं में बनने वाली इस फिल्म की शूटिंग हैदराबाद, पश्चिम बंगाल और लंदन में की जाएगी। इसकी सफलता का सबसे बड़ा घटक यह है कि इसे 'बाहुबली' और 'आरआरआर' जैसे विश्वप्रसिद्ध कृति रचने वाले वी विजयेन्द्र प्रसाद ने लिखा है, जिन्हें राज्यसभा में भी मनोनीत किया गया है।

दीप प्रज्वलन

कैंप का शुभारंभ श्रीअरविंदो एवं श्रीमां के चित्रों पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया। इस अवसर पर बाएं से अरविंदो सोसायटी मप्र के अध्यक्ष मनोज शर्मा, मुख्यमंत्री मप्र मोहन यादव के सांस्कृतिक सलाहकार श्रीराम तिवारी, राष्ट्रवादी कांग्रेस के प्रवक्ता बृजमोहन श्रीवास्तव, प्रधान आयकर आयुक श्रीमती सृजनी मोहंती एवं अरविंदो स्कूल भोपाल की डायरेक्टर श्रीमती रश्मि त्रिवेदी चित्र में दिखाई दे रही हैं।

हेल्थ चेकअप कैंप में 13 सौ से अधिक जांच हुई

जर्नलिस्ट क्लब के अध्यक्ष दिनेश गुप्ता ने अरविंदो अस्पताल के फाउंडर अध्यक्ष डॉ विनोद भंडारी का पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। साथ में अरविंदो यूनिर्वसिटी की चांसलर डॉ मंजुश्री भंडारी।

भोपाल दक्षिण पश्चिम विधानसभा के भाजपा विधायक भगवान दास सबनानी अपना चेकअप करवाते हुए। चित्र में दैनिक सुबह सवेरे के प्रधान संपादक उमेश त्रिवेदी, कार्यकारी प्रधान संपादक अजय बोकिल, संपादक विनोद तिवारी एवं क्षेत्रीय पार्षद बृजुला सचान दिखाई दे रहे हैं। कार्यक्रम में क्षेत्रीय विधायक भगवान दास सबनानी, दैनिक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक अरुण पटेल, अरविंदो सोसायटी भोपाल के सचिव सतीश चित्वार, जर्नलिस्ट क्लब के महासचिव सुनील श्रीवास्तव, न्यूज 18 मप्र छग के प्रमुख सुधीर दीक्षित बड़ी संख्या में पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

महिलाओं के सर्वाइकल केंसर, पेप्समेयर और लीवर की मुफ्त में हुई खास जांच

भोपाल। तुलसी नगर स्थित अरविंदो स्कूल में शनिवार को वृहद हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया गया। कैंप में 13 सौ से अधिक रोगियों की जांच की गईं।अरविंदो सोसायटी भोपाल , अरविंदो स्कूल भोपाल अरविंदो अस्पताल एवं मेडिकल कॉलेज इंदौर व जर्नलिस्ट क्लब भोपाल द्वारा हेल्थ चेकअप कैंप आयोजित किया गया है। इस कैंप में हदय, लीवर, कैंसर जैसे रोगों की मुफ्त जांच की गई और परीक्षण कराने वालों को आगे के उपचार की सलाह दी गई।। कैंप में स्तन कैंसर पेप स्मायर सहित स्त्रीजनित रोगों की विशेष जांच की गई । कार्यक्रम सुबह 10.30 बजे मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के सांस्कृतिक सलाहकार श्री राम तिवारी एवं भारतीय राजस्व सेवा की अधिकारी मुख्य आयकर आयुक श्रीमती सृजनी मोहंती के कर कमलों से प्रारंभ हुआ। हेल्थ चेकअप कैंप में मेडिकल के 112, सर्जरी के 46, पेट एवं लीवर संबंधी रोगों के 78, ENT के 52, आंखों के 110, डिमेटोलॉजी के 38, एंडोक्रोनॉलॉजी के 42, रेडियोलॉजी के 57, मरीजों सहित करीब 1314 रोगों का चेकअप किया गया। प्रत्येक मरीज सामान्य रक्तचाप और शुगर की भी जांच की गई। हेल्थ चेकअप कैंप में खासतौर पर होने वाली महंगी जांच जैसे महिलाओं की पेप्समेयर, सर्वाइकल कैंसर की जांच, सहित विभिन्न पैथोलॉजी जांच शामिल थी। कैंप शाम 5 बजे तक चला।

लीवर एवं पेट संबंधी बीमारियों का पता लगाने वाली अत्याधुनिक मशीन के बारे में जानकारी श्रीमती मोहंती देते हुए डॉ विनोद भंडारी। इस अवसर पर अरविंदो स्कूल की प्राचार्य श्रीमती नलिनी पटेल भी उपस्थित थी।

हैल्थ चेकअप

भारतीय राजस्व सेवा की अधिकारी मुख्य आयकर आयुक श्रीमती मोहंती हैल्थ चेकअप कैंप का उद्घाटन करते हुए। साथ में अरविंदो अस्पताल के फाउंडर अध्यक्ष डॉ.विनोद भंडारी भी मौजूद हैं।

दैनिक सुबह सवेरे के प्रधान संपादक एवं अरविंदो सोसायटी भोपाल के अध्यक्ष उमेश त्रिवेदी कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती सृजनी मोहंती का पुष्प गुच्छ से स्वागत करते हुए।